



निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

आप 80 हजार रुपये या 2 लाख रुपये महीना कमाएं। बिना किसी सही मनी प्लान के यह पैसा आपकी सोच से भी तेज गायब हो जाता है।

शेयर बाजार Vs एसआईपी
बेहतर है कौन

प्लानिंग **बिजनेस डेस्क**
अगर आप भी एक नए निवेशक हैं और अपने पैसों को शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में निवेश करने का प्लान बना रहे हैं, तो पहले आपको दोनों में से कहां से शुरूआत करनी चाहिए। आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं।

पैसों का निवेश जरूरी
पैसों का निवेश करना बहुत ही जरूरी होता है। ऐसे में हर व्यक्ति को अपनी बचत को एक अच्छी जगह निवेश जरूर करना चाहिए, जिससे वह अपनी वेलथ को बढ़ा सके। पैसों को निवेश करने के लिए कई सारे विकल्प मौजूद हैं। कुछ लोग सुरक्षित निवेश करना चाहते हैं, जिसके लिए वह बैंक एफडी और स्मॉल सेविंग स्क्रीम में अपने पैसों का निवेश करते हैं। वहीं कुछ लोग ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए रिस्क लेते हैं और शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में अपने पैसों का निवेश करते हैं। अगर आप भी एक नए निवेशक हैं, और अपने पैसों को शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में निवेश करने का प्लान बना रहे हैं, तो पहले आपको दोनों में से कहां से शुरूआत करनी चाहिए। आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं।

आइए जानते हैं नए निवेशक कहां से शुरू करें निवेश
बात करें शेयर बाजार में निवेश की तो शेयर बाजार में निवेश काफी रिस्क भरा होता है। किसी भी कंपनी के शेयर खरीदने पर आपको कितना रिटर्न मिलेगा, यह सीधा शेयर की कीमत पर निर्भर करता है। शेयर की कीमत बढ़ भी सकती है और घट भी सकती है। कीमत घटने पर आपको नुकसान भी हो सकता है। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले आपको कंपनी के कारोबार, बैलेंस शीट और सेक्टर ट्रेंड्स की समझ जरूर होनी चाहिए। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले आपको म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहिए।

नए निवेशकों के लिए म्यूचुअल फंड बेस्ट
अब बात कर लेते हैं म्यूचुअल फंड में निवेश की, तो शेयर बाजार में पहले न निवेश कर आपको सबसे पहले एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहिए। म्यूचुअल फंड के जरिए भी आपके पैसे शेयर बाजार में ही लगाए जाते हैं लेकिन यह पैसे कब और कैसे और कितना लगेगा, यह फंड मैनेजर तय करते हैं। एसआईपी में आप बस हर महीने एक निश्चित रकम निवेश करते हैं। लंबे समय तक निवेश कर आप यहां औसतन 12 प्रतिशत की दर से रिटर्न पा सकते हैं। शुरूआत में म्यूचुअल फंड में निवेश कर आप बाजार की चाल को समझ सकते हैं और आपको शेयर बाजार की समझ भी होगी। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले एक बार म्यूचुअल फंड में निवेश जरूर करें।

अनजाने और अनचाहे खर्च को रोकना होगा, मिडिल क्लास को नहीं रहेगी टेंशन

सैलरी मिलने के कुछ दिन बाद ही पर्स हो जाता है खाली, ये टिप्स आएंगे काम

उदाहरण से समझें : रिया 90,000 रुपये महीना कमाती है। वह हर महीने लगभग 20,000 रुपये सिर्फ रोज की कॉफी, लंच, स्नैक्स और वीकेंड पर बाहर घूमने में खर्च कर देती है। यह साल का 2.4 लाख रुपये हो जाता है। अगर इसकी आधी रकम भी 11% सालाना रिटर्न के साथ निवेश की जाए तो पांच साल में 8.4 लाख रुपये का फंड बन सकता है।

ये हैं काम के टिप्स

ऐसे अनचाहे खर्च को रोकने और पैसे पर कंट्रोल के लिए 4 टिप्स हैं। अपनी सैलरी की तरह हर महीने बचत को ऑटोमैटिक कर लें। इसके लिए किसी मुश्किल अकाउंट की जरूरत नहीं है। बस 4 आसान पॉकेट बना लें।

ये इस प्रकार हैं :

1. सैलरी हब : यह आपका मुख्य इनकम अकाउंट है। यानी आपकी सैलरी इसी अकाउंट में आती है।
2. संप्टी नेट : इसमें इमरजेंसी फंड और लक्ष्य-आधारित बचत के लिए पैसा रखें। यह रकम 60:40 के रेश्यो में होनी चाहिए।
3. प्रोथ इंजन : यह अकाउंट सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) और ऑटोमैटिक इन्वेस्टमेंट के लिए है।
4. डेली एक्सपेंसेस: यह अकाउंट यूपीआई और बिल पेमेंट के लिए है। यह आपकी सेविंग से अलग होगा।

टाइमिंग का रखें ध्यान

ऊपर बताए चार पॉकेट में पैसा समय पर इन्वेस्ट कर दें। यहां टाइमिंग बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि ज्यादातर लोगों की सैलरी महीने की आखिरी तारीख (30 या 31) या 1 तारीख को आ जाती है। ऐसे में हर महीने की 2 तारीख को ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट करें। महीने के बीच में खर्चों की समीक्षा करें और 25 तारीख तक अगले महीने की तैयारी कर लें।

ये तीन मंत्र काम के

पैसा कमाना एक स्किल है। पैसा बचाना एक आर्ट है और पैसे को कंपाउंड करना (ब्याज पर ब्याज कमाना) साइंस है। इन तीनों में महारत हासिल करें। ऐसे में फाइनेंशियल फ्रीडम अपने आप मिल जाएगा। पैसा का सही प्रयोग ही हमें जल्दी अमीर बना सकता है।



उदाहरण से समझें गणित

अपनी बात को समझाने के लिए हम एक उदाहरण का सहारा लेते हैं। एक लड़की रिया जो एक कंसल्टेंट हैं और 90,000 रुपये महीना कमाती हैं। वह हर महीने लगभग 20,000 रुपये सिर्फ रोज की कॉफी, लंच, स्नैक्स और वीकेंड पर बाहर घूमने में खर्च कर देती हैं। यह साल का 2.4 लाख रुपये हो जाता है। अगर इसकी आधी रकम भी 11% सालाना रिटर्न के साथ निवेश की जाए तो पांच साल में 8.4 लाख रुपये का फंड बन सकता है। छोटे-छोटे फैसले चुपके से बड़ी दौलत बन जाते हैं।

आखिर क्यों 'गायब' हो जाती है सैलरी

सैलरी गायब होने की पीछे असली वजह अनकॉन्सियस स्पेंडिंग यानी ऐसे खर्च है जो अनजाने में होता है। कई बार ऐसे छोटे खर्च होते हैं जिन पर ध्यान नहीं दिया जाता। उनके मुताबिक हमारा दिमाग बड़े खर्च पहचान लेता है लेकिन छोटे खर्च जैसे- रोजाना का खर्च, सब्सक्रिप्शन, अचानक कुछ खरीदना आदि खर्च का पता ही नहीं चलता। इस कारण हर महीने 25 से 40 हजार रुपये चुपके से खर्च हो जाते हैं। यही कारण है कि सैलरी आने के बाद महीना खत्म होने से पहले ही बटुआ खाली हो जाता है।

एक लाख 3 साल की एफडी में निवेश करने पर कौन सा बैंक दे रहा है सबसे ज्यादा रिटर्न

नॉलेज **बिजनेस डेस्क**
आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं।

ज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं। जब भी पैसों को निवेश करने की बात आती है, तो ज्यादातर लोग अपने पैसों को बैंक एफडी में ही निवेश करना पसंद करते हैं। इसका कारण एफडी में मिलने वाला फिक्स्ड रिटर्न और पैसों की सुरक्षा है। देश के अलग अलग बैंकों द्वारा अपनी अलग अलग अवधि वाली एफडी पर अलग अलग ब्याज दर से रिटर्न ऑफर किया जाता है। आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं।



की 3 साल की एफडी की ब्याज दरें 6.65 प्रतिशत हैं। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,950 रुपये मिलेंगे।

ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,800 रुपये मिलेंगे।

एक्सिस बैंक की 3 वर्ष की एफडी

प्राइवेट बैंक एक्सिस बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में सबसे ज्यादा ब्याज दर से रिटर्न ऑफर कर रहा है। इस बैंक

एचडीएफसी की 3 वर्ष की एफडी

प्राइवेट बैंक एचडीएफसी बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.40 प्रतिशत की

ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,200 रुपये मिलेंगे।

एसबीआई की 3 साल की एफडी

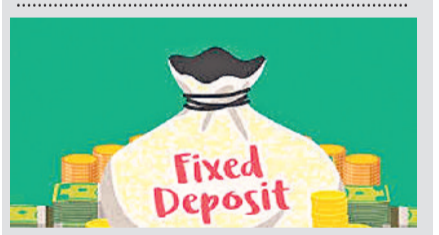
सरकारी बैंक एसबीआई अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.30 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,18,900 रुपये मिलेंगे।

केनरा बैंक की 3 वर्षीय एफडी

सरकारी बैंक केनरा बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.25 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,18,750 रुपये मिलेंगे।

एफडी के अलावा इन 5 सरकारी स्कीम में करें पैसों का सुरक्षित निवेश

बैंक एफडी के अलावा भी सुरक्षित निवेश के लिए कई सारे विकल्प मौजूद हैं। एफडी के अलावा आप सरकार की स्मॉल सेविंग स्क्रीम में अपने पैसों का निवेश कर सकते हैं। आइए जानते हैं।



जब भी पैसों को निवेश करने की बात आती है तो ज्यादातर लोग अपने पैसों को केवल बैंक एफडी में ही निवेश करते हैं क्योंकि बैंक एफडी में पैसा सुरक्षित रहता है यानी पैसों के खो जाने का कोई डर नहीं होता है लेकिन बैंक एफडी के अलावा भी ऐसी कई स्कीम हैं, जहां लोग अपने पैसों को सुरक्षित तरीके से निवेश कर सकते हैं और काफी अच्छा रिटर्न पा सकते हैं। हम बात कर रहे हैं सरकार की स्मॉल सेविंग स्क्रीम के बारे में। स्मॉल सेविंग स्क्रीम में आपको एक निश्चित ब्याज दर से रिटर्न मिलता है, और यह सरकारी स्कीम है। ऐसे में आपको पैसों की पूरी सुरक्षा भी मिलेगी। आइए जानते हैं बैंक एफडी के अलावा आप किस-किस सरकारी स्कीम में पैसों का निवेश कर सकते हैं

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट यानी एनएससी पोस्ट ऑफिस की सरकारी स्कीम है, जहां आपको 5 साल की अवधि के लिए अपने पैसों का निवेश करना होता है। नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट में आपको 7.7 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है।

सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्क्रीम

अगर आपको उम्र 60 साल से अधिक है तो आप सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्क्रीम में 5 सालों के लिए अपने पैसों को निवेश कर सकते हैं। इस स्कीम में 8.2 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है। यहां आप अधिकतम 30 लाख रुपये का निवेश कर सकते हैं।

पोस्ट ऑफिस आरडी

अगर आप एक साथ निवेश न कर थोड़ा थोड़ा निवेश करना चाहते हैं तो आप पोस्ट ऑफिस की आरडी में निवेश कर सकते हैं। यहां आपको हर महीने एक निश्चित रकम निवेश करनी होती है। इस स्कीम का मैच्योरिटी पीरियड 5 साल का होता है। आरडी में 6.7 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है।

किसान विकास पत्र

पोस्ट ऑफिस की किसान विकास पत्र यानी केवीपी स्कीम में आप अपने पैसों को 115 महीनों के लिए निवेश करके उन्हें डबल बना सकते हैं। किसान विकास पत्र स्कीम में 7.5 प्रतिशत सालाना की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है। ऐसे में आप यहां भी निवेश कर सकते हैं।

स्मार्ट निवेशक ऐसे पहचानते हैं म्यूचुअल फंड बेचने का सही वक़्त

सुझाव **बिजनेस डेस्क**

म्यूचुअल फंड में इन्वेस्टमेंट करने की बात तो हर निवेशक करता है, कौन सा फंड सबसे अच्छा है, कौन सा फंड मैनेजर बेहतर रिटर्न दे रहा है, या कौन सा स्कीम में पैसा लगाना चाहिए। हालांकि जब बात आती है म्यूचुअल फंड बेचने की, तो ज्यादातर लोग या तो गलत समय पर बेच देते हैं या फिर कभी बेचते ही नहीं, जबकि सच यह है कि जितना जरूरी इन्वेस्टमेंट करना है, उतना ही जरूरी है सही समय पर बेचना भी। अगर आप यह नहीं जानते कि म्यूचुअल फंड कब बेचना चाहिए, तो आपका अच्छा फंड भी नुकसान में बदल सकता है। अक्सर ऐसा होता है कि मार्केट में गिरावट आते ही निवेशक घबरा जाते हैं और अपने फंड को बेच देते हैं। यह सबसे आम लेकिन सबसे बड़ी गलती होती है। जैसे कि 2008 के वित्तीय संकट के दौरान कई निवेशकों ने डरकर अपने फंड बेच दिए थे, लेकिन उस टाइम पर अगर उन्होंने धैर्य रखा होता, तो अगले पांच सालों में उनकी रकम दोगुनी हो सकती थी, तो इसलिए, मार्केट गिरने पर डरकर फंड बेचना नहीं, बल्कि धैर्य रखना जरूरी होता है।



गलत समय पर म्यूचुअल फंड बेचने से हो सकता है भारी नुकसान

कब नहीं बेचना चाहिए ?

कई बार फंड कुछ महीनों के लिए खराब प्रदर्शन करते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि फंड खराब है। हर इन्वेस्टमेंट प्रोडक्शन के उतार-चढ़ाव के चक्र होते हैं। अगर आपने किसी उद्देश्य के लिए निवेश किया है, जैसे बच्चे की पढ़ाई, शादी या रिटायरमेंट, तो बीच में फंड बेचने की गलती न करें। इन्वेस्टमेंट का रिटर्न फंड न बेचें क्योंकि आपका कोई दोस्त या रिश्तेदार किसी नए फंड में निवेश कर रहा है। ऐसे में निवेशक को औसतन करीब 3-4% कम रिटर्न मिल सकता है क्योंकि वे गलत समय पर फंड बेच देते हैं, यानी निवेशक खुद अपने नुकसान के जिम्मेदार बन जाते हैं।

कब बेचना चाहिए फंड ?

म्यूचुअल फंड में निवेश जितना जरूरी है, उतना ही अहम है सही समय पर उसे बेचना। फंड को बेचना किसी जल्दबाजी का नहीं बल्कि एक रणनीतिक फैसला होना चाहिए। अगर आपका फाइनेंशियल टारगेट जैसे बच्चे की शिक्षा, घर खरीदना या रिटायरमेंट पूरा हो गया है, तो मुनाफा बुक कर लेना समझदारी है। वहीं, अगर कोई फंड लगातार 2-3 साल से खराब प्रदर्शन कर रहा है या अपने बेंचमार्क से पिछड़ रहा है, तो इसे बदलने का समय आ गया है। जिंदगी में फाइनेंशियल बदलाव जैसे नौकरी छूटना या रिटायरमेंट की स्थिति में जोखिम कम करना चाहिए। इसके अलावा, जब मार्केट ऊंचाई पर हो, तब आर्थिक मुनाफा निकालकर अपनी पूंजी सुरक्षित करना बेहतर प्लानिंग मानी जाती है।

फंड बेचने से पहले ये रखें ध्यान

म्यूचुअल फंड बेचने से पहले जल्दबाजी में कोई कदम उठाना नुकसानदायक हो सकता है। सबसे पहले अपने फंड की पूरी समीक्षा करें, क्या फंड मैनेजर, निवेश प्लानिंग या खर्च पर ध्यान दे रहे हैं, तो आपका निवेश सही है? अगर हा, तो स्थिति को समझकर निर्णय लें। किसी भी कदम से पहले अपने फाइनेंशियल सलाहकार की राय जरूर लें, ताकि नुकसान से बचा जा सके। तो याद रखें, म्यूचुअल फंड एक लॉन्ग-टर्म इन्वेस्टमेंट है इसलिए बाजार के उतार-चढ़ाव में घबराने की बजाय धैर्य रखें और अपनी वित्तीय योजना से भटकें नहीं। भारतीय म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री लगातार तेजी से आगे बढ़ रही है। जुलाई 2024 से जुलाई 2025 के बीच इसका आकार 64.96 लाख करोड़ से बढ़कर 75.35 लाख करोड़ तक पहुंच गया है, जो निवेशकों के बढ़ते भरोसे को पेश करता है।

सही डिसीजन पर टिका है म्यूचुअल फंड

म्यूचुअल फंड में असली सफलता सिर्फ अच्छे फंड चुनने से नहीं, बल्कि सही समय पर निर्णय लेने से आती है। बाजार में उतार-चढ़ाव सामान्य है, इसलिए गिरावट से घबराने की बजाय अपने फाइनेंशियल टारगेट पर फोकस रखें। समय पर फंड बेचना न सिर्फ आपकी पूंजी बचाता है, बल्कि मुनाफे को भी दोगुना कर सकता है।

एमआर पब्लिक विद्यालय में बाल दिवस पर विद्यार्थियों ने खेल प्रतियोगिताओं में दिखाया दम

200 मीटर दौड़ में खेलप्रिया और यश दौड़े सबसे तेज

लंबी कूद में हिमांशु प्रथम, अक्षत द्वितीय, योगेश तृतीय

नर्सरी से कक्षा 12वीं तक के विद्यार्थियों ने अपनी खेल प्रतिभा प्रदर्शित की



पहले तीन स्थान प्राप्त एमआर स्कूल के विद्यार्थियों को सम्मानित करते शिक्षकगण।



सोनीपत। विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए।

सोनीपत। सरस्वती शिक्षा संस्थान सौनियर सेक्टरडी स्कूल सोनीपत (एस-7) के प्रांगण में आज पूरे स्कूलों का खेल उत्सव कार्यक्रम हुआ। पूरे स्कूलों के छात्रों ने आकर्षक भाव भंगिमा में छोटी-छोटी प्रेरक कविताएं सुनाईं। लेमन स्क्रून, सॉल्ट रेस, प्लांटिंग रेस, क्विज रेस, बॉल बैलेंसिंग और बलून डुरस्टिंग रेस आदि अनेक प्रकार के खेलों को छात्रों ने प्रदर्शित करके उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। प्रथम क्रम पर शश्वती के करकमलों द्वारा पूरे स्कूलों के निदेशकों को सौनियर प्रदान किए गये। प्रथम स्थान, दूसरा स्थान, तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को मेडल प्रदान किए गये। स्कूल निदेशक दीपक, प्रधानाचार्य डॉ. अंकुश रोहिल्ला, मुख्यध्यापिका रीता तनेजा ने कर्मश्रम छात्रों को प्रोत्साहित किया।



खरखोदा। खिलाड़ियों का स्वागत करते प्रताप स्कूल प्रबंधन।

प्रताप स्कूल के देवांग व गजेन्द्र ने जीते गोल्ड

खरखोदा। 25 वीं सीनियर स्टेट नेटबॉल उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में आयोजित की गई। जिसमें प्रताप स्कूल के प्रतिभाशाली खिलाड़ी देवांग चौधरी व गजेन्द्र सिंह ने अपने बेहतरीन खेल के दम पर गोल्ड मेडल प्राप्त कर प्रताप स्कूल खरखोदा का नाम रोशन किया। दोनों खिलाड़ियों का चयन राष्ट्रीय चैंपियनशिप के लिए हुआ है। स्कूल में पहुंचने पर द्रोणाचार्य अवाड़ी ओमप्रकाश दहिया, प्राचार्य दया दहिया, एकेडमिक डायरेक्टर डॉ. सुबोध दहिया, कोच संसार दहिया ने फूल मालाओं के साथ दोनों खिलाड़ियों को स्वागत किया। द्रोणाचार्य अवाड़ी ओमप्रकाश दहिया ने बताया कि खेल सिर्फ मेडल जीतने का माध्यम नहीं है, बल्कि अनुशासन, मेहनत, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच सिखाने का माध्यम है। एकेडमिक डायरेक्टर डॉ. सुबोध दहिया ने बताया कि सच्ची लगन और सही दिशा में की गई मेहनत हमेशा सफलता दिलाती है। शिक्षा और खेल—दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, प्रतिस्पर्धी नहीं। पढ़ाई सोचने की क्षमता देती है, और खेल उसे जीने का साहस देती है। स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ियों ने अपनी इस शानदार उपलब्धि का श्रेय अपने प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन, विद्यालय प्रबंधन द्वारा दी गई खेल सुविधाओं, शिक्षकों के सतत प्रोत्साहन, तथा माता-पिता के सहयोग और आशीर्वाद को दिया।



गोहाना। विजेताओं को लक्ष्य के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए।

खेल उत्सव कार्यक्रम का आयोजन

सोनीपत। सरस्वती शिक्षा संस्थान सौनियर सेक्टरडी स्कूल सोनीपत (एस-7) के प्रांगण में आज पूरे स्कूलों का खेल उत्सव कार्यक्रम हुआ। पूरे स्कूलों के छात्रों ने आकर्षक भाव भंगिमा में छोटी-छोटी प्रेरक कविताएं सुनाईं। लेमन स्क्रून, सॉल्ट रेस, प्लांटिंग रेस, क्विज रेस, बॉल बैलेंसिंग और बलून डुरस्टिंग रेस आदि अनेक प्रकार के खेलों को छात्रों ने प्रदर्शित करके उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। प्रथम क्रम पर शश्वती के करकमलों द्वारा पूरे स्कूलों के निदेशकों को सौनियर प्रदान किए गये। प्रथम स्थान, दूसरा स्थान, तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को मेडल प्रदान किए गये। स्कूल निदेशक दीपक, प्रधानाचार्य डॉ. अंकुश रोहिल्ला, मुख्यध्यापिका रीता तनेजा ने कर्मश्रम छात्रों को प्रोत्साहित किया।

विजेताओं को किया सम्मानित

सोनीपत। आर्य गर्ल्स क्लब, सोनीपत में वार्षिक खेल दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत खेल उद्योग प्रमुखता और हरी झंडी दिखाकर की गई। विद्यालय की प्रधानाचार्या सुनीता अहलवात ने विद्यार्थियों को खेलों के महत्व के बारे में प्रेरणादायक संदेश देते हुए कहा कि खेलों से हमारे अंदर अनुशासन, समर्पण व टीम भावना का विकास होता है। विभिन्न वर्गों के लिए खो-खो, कबड्डी, लेमन रेस, स्क्रिबल चेंसर आदि मजेदार खेलों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सभी विद्यार्थियों ने पूरे जोश और उमंग के साथ भाग लिया और शानदार खेल कौशल का प्रदर्शन किया। दशक वीरों में बेटी छात्राओं ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। शिक्षकों द्वारा आयोजित मजेदार रेस ने कार्यक्रम में और भी रोमांच जोड़ दिया। अंत में विजेताओं को पदक और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रेस ने लगाई सबसे लंबी छलांग

गोहाना। सोनीपत मर्ग स्थित शेर सिंह पब्लिक स्कूल में वार्षिक खेलोत्सव में विद्यार्थियों ने खेल प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का दम दिखाया। खेलोत्सव का शुभारंभ स्कूल के चेरमैन नरेन्द्र मौरिक ने किया। अध्यक्षता प्रताप कुलद्वीप देवतल ने की। लंबी कूद प्रतियोगिता में टैगोर खन के प्रिय ने सबसे लंबी छलांग लगाई। कल्पना खन के रिकव द्वितीय रहे। वार्डनजी में इंदिरा खन को प्रथम, टैगोर खन को द्वितीय और टैगोर खन को तृतीय घोषित किया गया। कबड्डी प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में इंदिरा, टैगोर और कल्पना खन को टॉपी क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे। 400 मीटर प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में इंदिरा खन ने मुकूल प्रथम और टैगोर खन ने अमित द्वितीय रहे। माला फेकव को प्रतियोगिता में कल्पना खन से बिकिता और टैगोर खन से रिनु द्वितीय स्थान हासिल किया। विजेताओं को अशोक झांगी, रिनु खानगन, नुसैत रोहिल्ला, विशाल डानर, राहुल और रजत खुराना ने अपना आशीर्वाद देकर उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन को प्रशंसित किया।

खबर संक्षेप

जिला में आज होगा पदयात्रा का आयोजन
सोनीपत। जिले में 16 नवंबर को पदयात्रा का आयोजन किया जाएगा। सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में इस पदयात्रा का आयोजन होगा। जिसमें भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली बतौर मुख्यअतिथि शिरकत करेंगे। पदयात्रा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, अकबरपुर बरोटा से भगवान परशुराम चौक सोनीपत तक निकाली जाएगी।

श्रीमद् भागवत ज्ञान महायज्ञ का शुभारंभ

सोनीपत। शिव नगर स्थित भूरे बाबा मंदिर में श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ कलश यात्रा के साथ किया गया। सुबह अग्रवाल धर्मशाला रोहतक रोड से महिला श्रद्धालुओं ने ढोल बाजे के साथ कलश यात्रा निकाली जो वापिस कथा स्थल भूरे बाबा मंदिर में पहुंची। पूर्व कैबिनेट मंत्री कविता जैन विशेष रूप से कलश यात्रा में शामिल हुईं। इस अवसर पर कथावाचिका देवी देवकी शांडिल्य भी पहुंचीं।

लडू बांटकर मनाया बिहार चुनाव की जीत का जश्न

खरखोदा। बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत के उपलक्ष्य में विधायक पवन खरखोदा के कार्यालय में जोरदार जश्न मनाया गया। बड़ी संख्या में जुटे कार्यकर्ताओं ने लडू बांटकर खुशियां मनाईं और भाजपा के समर्थन में नारे लगाए। विधायक पवन खरखोदा ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नारायण चंदा जेठी जहां चुनाव प्रचार के लिए गए, वहां भाजपा को महत्वपूर्ण जीत मिली है। दावा किया कि आने वाले सभी राज्यों में होने वाले चुनावों में भी भाजपा प्रबल बहुमत से जीत दर्ज करेगी। कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश तेजी से प्रगति कर रहा है और विकास की नीरविका का लामा सोधे जनता तक पहुंच रहा है। भाजपा सरकार राष्ट्रहित को प्राथमिकता देते हर क्षेत्र में मजबूत काम कर रही है, जिसके चलते जनता का विश्वास लगातार बढ़ रहा है। जश्न के दौरान खरखोदा मंडल अध्यक्ष नरेश पाराशर के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने लडू बांटे और विजयोत्सव मनाया। मुकुंश सैनी, पार्षद गोपाल, अनिल, नरेंद्र जोशी, अजय राठौर, प्रेम जंगल व अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव 'रिदम 2025' का आगाज

सोनीपत। दोनबुद्धा छोटू राम विद्यालय में प्रौद्योगिकी विधि मुख्यालय वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव 'रिदम 2025' का आगाज हो गया है। कार्यक्रम का शुभारंभ आरएसएस के प्रांत प्रचार प्रमुख राजेश गोयल व कुलपति प्रो. श्री प्रकाश सिंह ने दीप प्रज्वलन करके किया। युवा उत्सव 16 नवंबर तक चलेगा, जिसमें विविध विभिन्न विभागों और संकायों के विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर प्रांत के आरएसएस प्रचार प्रमुख राजेश गोयल मुख्यअतिथि थे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. श्री प्रकाश सिंह ने की। हरियाणवी मंडली ने शानदार प्रस्तुति देकर युवा सांस्कृतिक उत्सव में दर्शकों को झुंमने पर मजबूर कर दिया। डीसीआरएसएसटी के वार्षिक युवा उत्सव में संबोधन के दौरान मुख्यअतिथि गोयल ने कहा कि हमें समाज व राष्ट्र के लिए हर जगह रिदम की आवश्यकता है। रिदम केवल संगीत का हिस्सा नहीं है बल्कि हमारे जीवन की हर सफलता के पीछे रिदम होता है। जब संगीत रिदम में बजता है तो हमें आनंद की अनुभूति होती है तथा हमारी आंखें बंद हो जाती हैं। जब रिदम में दोलन व मंजीरे बजते हैं तो हमारा शरीर थिरकने लग जाता है। आरएसएस प्रांत प्रचार प्रमुख गोयल ने कहा कि जब भी जीवन में किसी भी स्थान पर रिदम टूट जाता है तो उसका संवाहन करना आसान नहीं होता है।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

जनजातीय गौरव दिवस पर जुआ में किया कार्यक्रम

सोनीपत। जनजातीय गौरव पखवाड़ा के तहत शनिवार को जिला शिक्षा विभाग के द्वारा जिला सूचना एवं जन समर्पक विभाग के सहयोग से जनजातीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन राजकीय बालिका वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जुआ में किया गया। जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे जनजातीय नृत्य, संगीत, बुकडिज नाटक, जनजातीय भित्ति चित्रण, जनजातीय चित्रकला, डिजिट व अन्य करवाई गईं। जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य में मनाया गए कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूलों छात्रों को सांस्कृतिक विविधताओं के बारे में समझाना व समाज के विभिन्न समुदाय के बारे में जानकारी देना है। सभी प्रतियोगिताओं में छात्रों ने बह-चदकर भाग लिया। इस अवसर पर छात्रों को वर्चुअल माध्यम से जनजातीय समुदाय के आवासों को भी दिखाया गया। जिला सूचना एवं जन समर्पक अधिकारी राकेश गोयल ने बताया कि जनजातीय गौरव दिवस पखवाड़ा का आयोजन जनजातीय समुदाय के अमूल्य योगदान को सम्मानित करने व जन-जन को जागरूक करने के लिए किया जाता है। जिससे सभी को साहस के इतिहास, पहचान और भावना विकसित हो, आह्वार देने में जनजातीय समुदाय की भूमिका के बारे में पता चल सके।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव 'रिदम 2025' का आगाज

सोनीपत। दोनबुद्धा छोटू राम विद्यालय में प्रौद्योगिकी विधि मुख्यालय वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव 'रिदम 2025' का आगाज हो गया है। कार्यक्रम का शुभारंभ आरएसएस के प्रांत प्रचार प्रमुख राजेश गोयल व कुलपति प्रो. श्री प्रकाश सिंह ने दीप प्रज्वलन करके किया। युवा उत्सव 16 नवंबर तक चलेगा, जिसमें विविध विभिन्न विभागों और संकायों के विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर प्रांत के आरएसएस प्रचार प्रमुख राजेश गोयल मुख्यअतिथि थे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. श्री प्रकाश सिंह ने की। हरियाणवी मंडली ने शानदार प्रस्तुति देकर युवा सांस्कृतिक उत्सव में दर्शकों को झुंमने पर मजबूर कर दिया। डीसीआरएसएसटी के वार्षिक युवा उत्सव में संबोधन के दौरान मुख्यअतिथि गोयल ने कहा कि हमें समाज व राष्ट्र के लिए हर जगह रिदम की आवश्यकता है। रिदम केवल संगीत का हिस्सा नहीं है बल्कि हमारे जीवन की हर सफलता के पीछे रिदम होता है। जब संगीत रिदम में बजता है तो हमें आनंद की अनुभूति होती है तथा हमारी आंखें बंद हो जाती हैं। जब रिदम में दोलन व मंजीरे बजते हैं तो हमारा शरीर थिरकने लग जाता है। आरएसएस प्रांत प्रचार प्रमुख गोयल ने कहा कि जब भी जीवन में किसी भी स्थान पर रिदम टूट जाता है तो उसका संवाहन करना आसान नहीं होता है।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।



सोनीपत। प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ी।

गुरुकुल मटिडू का वार्षिक महोत्सव आरम्भ

खरखोदा। शनिवार को गुरुकुल मटिडू में वार्षिक महोत्सव आरंभ धूमधाम से मनाया गया। जिसमें विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आरंभ में हवन करके सर्व मंगलम का कामना की गई। मुख्य अतिथि के रूप में मेजर जनरल बिशम्बर दयाल (विशेष सेवा पद) और उनकी पत्नी उर्मिला दयाल प्यारों। विद्यालय के चेरमैन बिजेन्द्रियर सरखेदे दहिया ने फूलों के गुलदस्तों से मुख्य अतिथि का स्वागत किया। मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि सहित अन्य महमानों ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, चेरमैन, डायरेक्टर व प्राचार्यों ने मिलकर विद्यालय का वार्षिक कैलेंडर रिलीज किया और सत्र 2024-25 में 12वीं कक्षा में 90% से अधिक अंकों प्राप्त करने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया। इस वर्ष गंगा स्तम्भ को गुरुकुल का विजेता घोषित किया। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षा ही ज्वाली का मुख्य आधार है। उन्होंने शिक्षा की कामना को समझाया और विद्यार्थियों को देश सेवा के लिए प्रेरित किया। चेरमैन बिजेन्द्रियर सरखेदे ने शिक्षा के क्षेत्र में नई गतिविधियों के आरंभ के विषय में जानकारी दी। अंत में मुख्य अतिथि को स्मृति किंवदंशकर सम्मानित किया। राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन किया गया।



गोहाना। विजेताओं को लक्ष्य के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए।

कल्पना चावला विद्यापीठ के विद्यार्थी छात्र

खरखोदा। कल्पना चावला विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने गौता महोत्सव में विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर विद्यालय का नाम रोशन किया है। संवाद प्रतियोगिता में कक्षा आठवीं से दश व यश तथा कक्षा दसवीं से चेतन व तन्वी ने प्रथम स्थान हासिल किया। विषय लेखन में कक्षा बारहवीं की विद्यार्थी हिमांशु ने तृतीय स्थान हासिल किया। श्लोक उत्तरावर्णन में कक्षा आठवीं से दश तथा कक्षा नववीं की विद्यार्थी अनुष्का ने प्रथम स्थान हासिल किया। भाषण प्रतियोगिता में कक्षा आठवीं से ईशानी ने प्रथम स्थान हासिल किया। जबकि बारहवीं की विद्यार्थी आरजु ने द्वितीय स्थान हासिल किया। प्रबोनेरी प्रतियोगिता में कक्षा छठी से आठवीं के प्रतिभागी विद्यार्थियों-वीरन, प्रियाश व बलराम ने तृतीय स्थान हासिल किया। पेंटिंग प्रतियोगिता में विद्यार्थियों को सल्लना पुरस्कार मिला। विद्यालय पहुंचने पर सभी विजेता विद्यार्थियों तथा उनके तैयारीकर्ता अध्यापकों- अनिता, सुमित्रा, कृष्णा, विजेन्द्र हुडा, और पुष्पा का स्वागत किया गया। प्राचार्य कषा वरुन ने कहा कि यह प्रदर्शन विद्यालय के लिए गर्व की बात है। प्राथमिक प्रवर्गों रीतु ने सभी विजेता विद्यार्थियों को बधाई दी तथा आगे भी ऐसे ही शानदार प्रदर्शन करते रहने के लिए कामना की।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

रस्साकशी में टैगोर हाउस की छात्राओं ने बाजी मारी

सोनीपत। हिंदू विद्या मंदिर स्कूल विशाल नगर सोनीपत में वार्षिक खेलोत्सव प्रतियोगिता का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। कार्यक्रम में निगम पार्षद चरण सिंह जोशी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जिनका स्वागत निदेशक रोहतास ने पगड़ी और फूलमालाओं से किया। स्कूल के सभी छात्रों को भगत सिंह, टैगोर, पटेल और सुभाष हाउस में विभाजित कर प्रतियोगिताएं करवाई गईं। मेक रेस, लेमन रेस, 100, 200 और 400 मीटर रेस, लॉग जंप, हाई जंप, कबड्डी, रस्साकशी, खो-खो सहित कई आकर्षक खेलों में बच्चे बह-चदकर हिस्सा लिया। 100 मीटर दौड़ में पटेल हाउस के कार्तिक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि रस्साकशी में टैगोर हाउस की छात्राओं ने बाजी मारी। हाई जंप में सुभाष हाउस के गोपाल प्रथम रहे। कार्यक्रम कोच संदीप रामछाज और आनंद सिंह धनखंड के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। अभिभावकों ने भी बड़ी संख्या में खिलाड़ियों को उत्साहवर्धन किया।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत साउथ पॉइंट वर्ल्ड स्कूल में आयोजित स्पोर्ट्स मीट में विजेता टीम एनजीक्यूटिव चेरमैन रोहित खत्री व वाइस चेरमैन वरिष्ठा के साथ ट्रॉफी लेकर खुशी मनाते हुए।

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज। सोनीपत सा

खबर संक्षेप



माता-पिता की स्मृति में करवाया कवि सम्मेलन

सोनीपत। दिल्ली विद्यापीठ के संचालक वीर सिंह सैनी ने अपने माता पिता की स्मृति में विद्यालय में हवन और कवि सम्मेलन का आयोजन किया। विद्यालय में आयोजित कवि सम्मेलन के मंच संचालक डॉ. मनोज कुमार ने अन्य प्रसिद्ध कवि प्रतिभाओं सरदार प्रताप सिंह फौजदार, खुशींद हैदर, लक्ष्मण नेपाली, सुन्दर कटारिया (लाफ्टर फेम, गुरुग्राम), मनवीर मथुर, पदम अलंबेला खुशबु शर्मा, योगिता चौहान नवाब शकील जट्टेड़ी की उपस्थिति में सभी श्रोताओं का अभिवादन करते हुए बताया कि किसी कवि के लिए उसकी कविताएँ जीवन में स्मृति का संचार करती हैं।

हनुमान मंदिर में नेत्र चिकित्सा शिविर 17 को

सोनीपत। महात्मा आशानंद वधवा हिंदू मंच और जिला अंधता निवारण समिति सोनीपत के तत्वाधान में 26/4 वें निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर 17 नवंबर को आयोजित किया जाएगा। यह शिविर श्री हनुमान मंदिर, मैमोरियल अस्पताल के पीछे वाली गली में सुबह 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक चलेगा। शिविर का आयोजन संस्था प्रधान हरिचंद स्नेही की अध्यक्षता में होगा।

मांगें पूरा करवाने में नहीं छोड़ेंगे कसर : पंवार

हरिभूमि न्यूज ►► सोनीपत

ठेका सफाई कर्मचारी एकता मंच से संबंधित मूल निवासी कर्मचारी कल्याण महासंघ के बेनर तले सफाई कर्मचारियों ने अपनी लंबित मांगों को लेकर बरोदा से विधायक इंदुराज नरवाल, सोनीपत से पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार, पूर्व विधायक पदम सिंह दहिया को अपनी लंबित मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा। सोनीपत से पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार ने कहा कि नगर निगम सफाई कर्मचारी सोनीपत के विकास में अहम योगदान रखते हैं। सरकार का कर्तव्य बनता है कि दिन-रात मेहनत करने वाले सफाई कर्मचारियों की समस्याओं का समाधान तत्परता के साथ करें, ताकि उन्होंने धरना प्रदर्शन करने पर मजबूर न होना पड़े। पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार ने कहा कि जिस तरह पिछले पांच साल में उनकी मांगों को बुलंद किया है इसी तरह आगामी विधानसभा सत्र में उनकी आवाज को बुलंद किया जाएगा।

अनशन पर बैठे कर्मियों से मिले विधायक व पूर्व विधायक

सोनीपत। ठेका सफाई कर्मचारी एकता मंच संबंधित मूल निवासी कर्मचारी कल्याण महासंघ सहयोग बली सेना सोनीपत यूनिशन का धरना शनिवार को 45 वें दिन जारी रहा। इस दौरान आमरण अनशन भी जारी रहा। धरने की अध्यक्षता प्रधान मुकेश टाक ने की और संचालन सचिव सावन कुमार ने किया। शनिवार को धरने पर पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार, बरोदा विधायक इंदुराज नरवाल व असंगठित कामगार कर्मचारी कॉंग्रेस के जिला अध्यक्ष यशवंत राव चौहान पहुंचे। इन नेताओं को सफाई कर्मचारियों ने अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा। उन्होंने अशवासन दिया कि आपकी आवाज जल्द से जल्द संसद में उठाई जाएगी। धरने पर मुकेश कर्मा, प्रवीण, रविंद्र, आरती, रीना, सिला, सुमन, कश्मीरी, धर्मवीर, हजारी, रणबीर, सुभाष, सुमित, प्रशांत आदि मौजूद रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 8295154800, 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन **हरिभूमि** के माध्यम से
साईज संस्करण विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी स्थानीय संस्करण के छ. 2000/-
10 X 8 सें.मी अन्दर के पृष्ठ पर छ. 2500/-
+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कई रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

नालों में भरी हुई थी बजरी, पानी निकासी न होने के कारण फैल रही थी दुर्गंध

पार्षदों की मौजूदगी में अभियान जारी जलभराव और गंदगी से निजात

दुकानदारों से अपील: नालों पर कब्जा हटाएं और कूड़ा सड़क पर न डालें

हरिभूमि न्यूज ►► सोनीपत

स्वच्छता अभियान के तहत नगर निगम मेयर राजीव जैन की अगुवाई में बहालगढ़ दीपालपुर रोड पर नालों की सफाई शुरू करवाई ताकि सड़क पर इकट्ठा हुए गंदे पानी की निकासी सुचारु ढंग से हो सके। नालों की एक सिरे से गाद निकाली गई और विशेषकर नालों में भरी हुई रोड़ी बजरी भी निकाली।



सोनीपत। सफाई अभियान के दौरान निर्देश देते हुए मेयर राजीव जैन।

नाले के ऊपर बनाए पक्के कब्जे हटाएं दुकानदार

कूड़े के ढेर को उठवाया

सड़क के दोनों तरफ बने नालों पर कब्जा होने तथा पानी की निकासी संभव नहीं हो पा रही है। राजीव जैन ने दुकानदारों से अपील की कि नाले के ऊपर बनाये पक्के कब्जे हटा लें तभी नालों की सफाई पूरी तरह हो सकती है। उन्होंने सुझाव दिया कि अपनी दुकान के सामने नाले पर लोहे की धिल के ढक्कन लगा लें ताकि सफाई करने में आसानी हो सके। इसके बाद खेवड़ा रोड पर पड़े कूड़े के ढेर को उठवाया और दुकानदार से सड़क पर कूड़ा ना डालने की अपील की। इस अभियान के अवसर पर पार्षद मुनीराम लाल ठोलेदार, राजेश कौशिक, सुनील रोहिल्ला, प्रिंस, रामदास धीमान, ललित बहालगढ़, हैप्पी रोहिल्ला आदि मौजूद रहे।

नगर निगम के कूड़ा उठाने वाले ड्राइवरों का विरोध प्रदर्शन



सोनीपत। विरोध प्रदर्शन करते हुए वाहनों के चालक। फोटो : हरिभूमि

सोनीपत। सोनीपत में नगर निगम के कूड़ा उठाने वाले वाहनों के ड्राइवरों ने अपने अधिकारों और लंबित मांगों को लेकर मंगलवार को जोरदार प्रदर्शन किया। यह विरोध जिला पार्षद संजय बड़वासनिया के नेतृत्व में बाबा धाम कमी रोड पर आयोजित किया गया। कर्मचारियों का आरोप है कि ठेकेदार पिछले सात महीनों से उनका ईएसआई और पीएफ नहीं काट रहा है, साथ ही सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम संशोधित वेतन भी नहीं दिया जा रहा है। कर्मचारियों ने कहा कि लगातार अनदेखी के चलते अब उनका धैर्य जवाब दे चुका है। जिला पार्षद संजय बड़वासनिया ने कहा कि नगर निगम में ठेके पर लगे कर्मचारी लगातार शोषण का सामना कर रहे हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि प्रत्येक वाहन चालक से 20-20 हजार रुपये घर-घर से कूड़ा उठाने की पूर्वा कटने के नाम पर वसूले जा रहे हैं, जो पूरी तरह गलत और शोषणकारी है। उन्होंने कहा कि यह व्यवहार किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। प्रदर्शन में हरपाल, सदीप, कुलदीप, योगेश, राजवीर, सदीप, सुरेश, जयवीर, कुलदीप, राजवीर, सतीश और महावीर सहित कई कर्मचारी मौजूद रहे।

मांगें पूरा करवाने में नहीं छोड़ेंगे कसर : पंवार

हरिभूमि न्यूज ►► सोनीपत

ठेका सफाई कर्मचारी एकता मंच से संबंधित मूल निवासी कर्मचारी कल्याण महासंघ के बेनर तले सफाई कर्मचारियों ने अपनी लंबित मांगों को लेकर बरोदा से विधायक इंदुराज नरवाल, सोनीपत से पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार, पूर्व विधायक पदम सिंह दहिया को अपनी लंबित मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा। सोनीपत से पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार ने कहा कि नगर निगम सफाई कर्मचारी सोनीपत के विकास में अहम योगदान रखते हैं। सरकार का कर्तव्य बनता है कि दिन-रात मेहनत करने वाले सफाई कर्मचारियों की समस्याओं का समाधान तत्परता के साथ करें, ताकि उन्होंने धरना प्रदर्शन करने पर मजबूर न होना पड़े। पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार ने कहा कि जिस तरह पिछले पांच साल में उनकी मांगों को बुलंद किया है इसी तरह आगामी विधानसभा सत्र में उनकी आवाज को बुलंद किया जाएगा।

अनशन पर बैठे कर्मियों से मिले विधायक व पूर्व विधायक

सोनीपत। ठेका सफाई कर्मचारी एकता मंच संबंधित मूल निवासी कर्मचारी कल्याण महासंघ सहयोग बली सेना सोनीपत यूनिशन का धरना शनिवार को 45 वें दिन जारी रहा। इस दौरान आमरण अनशन भी जारी रहा। धरने की अध्यक्षता प्रधान मुकेश टाक ने की और संचालन सचिव सावन कुमार ने किया। शनिवार को धरने पर पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार, बरोदा विधायक इंदुराज नरवाल व असंगठित कामगार कर्मचारी कॉंग्रेस के जिला अध्यक्ष यशवंत राव चौहान पहुंचे। इन नेताओं को सफाई कर्मचारियों ने अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा। उन्होंने अशवासन दिया कि आपकी आवाज जल्द से जल्द संसद में उठाई जाएगी। धरने पर मुकेश कर्मा, प्रवीण, रविंद्र, आरती, रीना, सिला, सुमन, कश्मीरी, धर्मवीर, हजारी, रणबीर, सुभाष, सुमित, प्रशांत आदि मौजूद रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 8295154800, 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन **हरिभूमि** के माध्यम से
साईज संस्करण विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी स्थानीय संस्करण के छ. 2000/-
10 X 8 सें.मी अन्दर के पृष्ठ पर छ. 2500/-
+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कई रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

थाना सिविल लाइन क्षेत्र के होटल, ढाबा और टैक्सी संचालकों को दिए निर्देश

हरिभूमि न्यूज ►► सोनीपत

सोनीपत। सोनीपत में सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक मजबूत बनाने के उद्देश्य से सहायक पुलिस आयुक्त सोनीपत अमित धनखड़ की अध्यक्षता में शुक्रवार को थाना सिविल लाइन क्षेत्र के होटल एवं ढाबा मालिकों, टैक्सी एसोसिएशन के प्रतिनिधियों और गाड़ी सेल-परचेज कारोबारियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में क्षेत्र की सुरक्षा, अपराध की रोकथाम और व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर आने-जाने वाले वाहनों एवं व्यक्तियों को पहचान प्रक्रिया को सुदृढ़ करने पर विशेष जोर दिया गया। बैठक की शुरुआत एसोपी अमित धनखड़ द्वारा उपस्थित सभी संचालकों का स्वागत करते हुए हुई। उन्होंने होटल और ढाबा संचालकों को निर्देश दिया कि किसी भी मेहमान को ठहराने से पहले उसकी वैध पहचान अनिवार्य रूप से सत्यापित करें और उसका रिकॉर्ड सुरक्षित रखें। बैठक में थाना सिविल लाइन प्रभारी निरीक्षक उमेश कुमार सहित बड़ी संख्या में व्यापारी मौजूद रहे।



सोनीपत। सोनीपत में सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक मजबूत बनाने के उद्देश्य से सहायक पुलिस आयुक्त सोनीपत अमित धनखड़ की अध्यक्षता में शुक्रवार को थाना सिविल लाइन क्षेत्र के होटल एवं ढाबा मालिकों, टैक्सी एसोसिएशन के प्रतिनिधियों और गाड़ी सेल-परचेज कारोबारियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई।

धूमधाम से किया जाएगा स्वागत

यात्रा का संयोजन पूर्व पार्षद नंदकिशोर चौहान और गोविंद दहिया के जिम्मे रहेगा। भाजपा जिला महासचिव तन्ना देवीदास ने बताया कि बरोदा से सोनीपत तक निर्धारित पड़कों पर यात्रा का स्वागत फूलमालाओं, पुष्पचक्रों, दोल-नगाड़ों और डोंजों के साथ किया जाएगा। यात्रा नाते-नाते उत्साहपूर्ण माहौल में विभिन्न मांगों से होते हुए सोनीपत पहुंचेगी। बैठक में नरेंद्र भारती, किशोर वशिष्ठ, नंदकिशोर चौहान, गोविंद दहिया, विकास शर्मा, सोनिया मोर, आरती शर्मा, किरण बालाजी, हरेंद्र, बबिता दहिया, कुंजेश कौशिक, आरत मल्होत्रा सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर निकालेंगे एकता यात्रा : अत्री

हरिभूमि न्यूज ►► सोनीपत

भारतीय जनता पार्टी सोनीपत की जिला स्तरीय बैठक आज पीडब्ल्यूटी रेस्ट हाउस में आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता जिला मीडिया प्रभारी एडवोकेट दिनेश अत्री ने की। बैठक में लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वां जयंती के उपलक्ष्य में आगामी 16 नवंबर को निकलने वाली भव्य एकता यात्रा की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। एडवोकेट दिनेश अत्री ने बताया कि यात्रा की शुरुआत राई हल्के के बरोदा गांव से होगी और समापन आईटीआई चौक स्थित परशुराम चौक, सोनीपत पर किया जाएगा। लगभग 12 किलोमीटर लंबी इस यात्रा में 500 से अधिक युवा, भाजपा पदाधिकारी, नेता, विधायक, पूर्व विधायक, पूर्व प्रत्याशी, जिला पार्षद और विभिन्न प्रकोष्ठों के पदाधिकारी भाग लेंगे। यात्रा में मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बडोली शामिल होंगे।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत विधायक कादियान ने उठाई झाड़ू

हरिभूमि न्यूज ►► गन्नीर

गन्नीर। अभियान में विधायक कादियान खुद झाड़ू पकड़कर शहर में बड़े स्तर पर सफाई अभियान चलाते हुए।

कौशल बिजनेस चैलेंस स्पर्धा में दिए आइडिया

सोनीपत। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गद्दी बाल्मन में खंड स्तरीय टैलेंट सर्च और कौशल बिजनेस चैलेंज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें सभी राजकीय विद्यालयों के कक्षा 6 से 8 और 9-12 में टैलेंट सर्च और कक्षा 11 और 12 के विद्यार्थियों ने कौशल बिजनेस चैलेंज प्रतियोगिता में भाग लिया। खंड शिक्षा अधिकारी सोनीपत सूरजभान एवं दोनों कार्यक्रम के ज्यूनियर अधिकारी अजुल कुमार भाजपा के दिश निदेशन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कौशल बिजनेस चैलेंज की खंड संयोजक एबी आरसी मौजिका दहिया और टैलेंट सर्च की खंड संयोजक मंजू बी आरपी ने कार्यक्रम का आयोजन किया। टैलेंट सर्च में गायन, नृत्य, शिष्टर तथा विज्ञान आर्ट प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने भाग लिया।

खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते : कौशिक

गन्नीर। वाहलूड कैम्पर इंटरनेशनल स्कूल में तीन दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव के समापन पर विजेता छात्रों को पुरस्कार वितरित किए गए।



गन्नीर। मार्केट कमेटी के उपाध्यक्ष योगेश कौशिक, स्कूल के निदेशक अजय यादव विजेता को ट्राफी देते हुए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि गन्नीर मार्केट कमेटी के उपाध्यक्ष योगेश कौशिक ने शिरकत की। उन्होंने विभिन्न खेल स्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विजेता विद्यार्थियों को मेडल प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया। स्कूल के निदेशक अजय यादव और प्राचार्य अरुण गौतम ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। मुख्य अतिथि योगेश कौशिक ने संबोधित करते हुए कहा कि खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक पंद्रह दिन में एक दिवसीय खेल उत्सव आयोजित किया जाए, ताकि बच्चे मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहकर अपनी प्रतिभा को निखार सकें। कबड्डी, खो-खो, थो इवेंट्स तथा टीम गेम्स में अव्वल रहे विद्यार्थियों को गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉन्ज मेडल से सम्मानित किया गया। विद्यालय निदेशक अजय यादव ने बताया कि स्कूल खेलों के माध्यम से बच्चों में टीम भावना, अनुशासन और नेतृत्व गुण विकसित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। समारोह का संचालन शिक्षक साहित्य, मुकेश शर्मा, राजीव कुमार, सुरेंद्र, लीलम, शशी, रेनु, राखी, नेहा, प्रियंका, सोनिया, लवली, सुमन, कुसुम, ललित, सुष्टि, आशना, रूपेश और प्रीति ने सफलतापूर्वक किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गीत के साथ हुआ।

अभियान को जन-आवाज बनाने में निभाए जिम्मेदारी

हरिभूमि न्यूज ►► सोनीपत

28 नवंबर को प्रस्तावित वोट चोर गद्दी छोड़ अभियान को जन-आंदोलन का रूप देने के लिए शनिवार को कांग्रेस भवन में पार्टी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण रणनीति बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सांसद सतपाल ब्रह्मचारी ने की, जबकि संचालन हरण जिला कांग्रेस अध्यक्ष कमल दिवान ने संभाला। बैठक में अभियान की रूपरेखा, कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियों और



गन्नीर। अभियान में विधायक कादियान खुद झाड़ू पकड़कर शहर में बड़े स्तर पर सफाई अभियान चलाते हुए।

स्वच्छता ही सेवा- मेरा गन्नीर मेरी पहचान अभियान के तहत शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देशभर में शुरु की गई स्वच्छ भारत मिशन की भावना से विधायक देवेंद्र कादियान के नेतृत्व में रेलवे रोड स्थित शहीद चौक से गद्दी केसरी तक स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें नगरपालिका टीम और विभिन्न सामाजिक संगठनों ने भाग लिया। अभियान की शुरुआत विधायक कादियान ने खुद झाड़ू पकड़कर की। उन्होंने सड़क किनारे जमा कचरा समेटा और आसपास मौजूद लोगों को यह संदेश दिया कि स्वच्छ शहर की जिम्मेदारी हर नागरिक की है। अभियान में नगरपालिका के सफाई कर्मचारी भी शामिल रहे, जिन्होंने देवा सोशल डेवलपमेंट सोसायटी की टीम के साथ मिलकर पूरे मार्ग की सफाई की। विधायक ने बताया कि देवा सोशल डेवलपमेंट सोसायटी द्वारा नगरपालिका को हाल ही में हाई-टेक सफाई मशीन और तीन ट्रेक्टर भेंट किए गए हैं।

ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में विधायक इंदुराज नरवाल, गान्नीर जिला अध्यक्ष संजीव दहिया, पूर्व विधायक जयवीर वाल्मीकि, पदम सिंह दहिया, सुरेंद्र पवार, शौर्यवीर कादियान, प्रदीप गौतम, जयमंगलान अतिल, जयवीर अतिल, एमसी संजय बड़वासनिया, एमसी मौजिका नरवाल, सुरेंद्र छिकार, नितिन तुसीर, सुरेंद्र शर्मा, पयल मलिक, अमनदीप, युक्ति, रंजीत कौशिक, सुष्मा, प्रेम रेलन, ऋतुव्रात, एमसी जयसिंह, कुलदीप देशवाल, लीलू प्रधान, रणदीप, जयवीर राठी, डा. सतबीर निर्माण, और सरदार इंदरपाल सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। अंत में एकता, अनुशासन और मजबूत जनसंपर्क के साथ अभियान को सफल बनाने का संकल्प लिया।



गन्नीर। बारसेट बाल खिलाड़ियों के साथ स्कूल का स्टाफ।

इंटर हाउस बास्केट बाल प्रतियोगिता शुरु

गन्नीर। बाल मवन इंटरनेशनल स्कूल में दो दिवसीय इंटर हाउस बास्केट बाल प्रतियोगिता आरंभ हुई। इस प्रतियोगिता में कक्षा छठी से बारहवीं के लड़के और लड़कियों के चारों सदस्य प्रेस्टीज, ग्लोरी, डिव्हाइन और डेविलों में भाग लिया। लड़कों की श्रेणी में प्रेस्टीज और ग्लोरी सिद्धन ने फाइनल में प्रवेश किया। लड़कियों की श्रेणी में प्रेस्टीज और डिव्हाइन हाउस ने जीत हासिल कर फाइनल में जगह बनाई। विद्यालय के प्राचार्य जय भारत गुप्ता ने कहा यह आयोजन हमारे छात्रों के बीच टीम भावना और खेलकुशलता को बढ़ावा देता है।



गन्नीर। बारसेट बाल खिलाड़ियों के साथ स्कूल का स्टाफ।

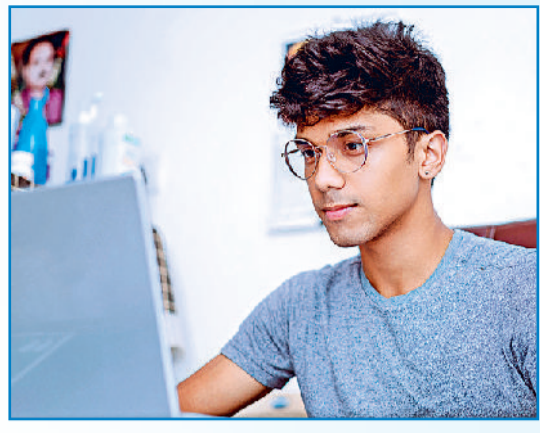
विशेष: अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस 19 नवंबर

दबावों-अपेक्षाओं-चुनौतियों से विवश दुनिया भर के पुरुष

पुरुषों को परिवार का पालक, कमाने वाला और हर दबाव सहन कर लेने वाला लौह मनुष्य समझा जाता है। सदियों से चली आ रही यह मान्यता आज भी बरकरार है। इस वजह से वे अनेक तरह की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओं का सामना करने को विवश हैं। ऐसे में जरूरत है कि न केवल समाज बल्कि स्वयं पुरुष भी इन दबावों से मुक्त होने का प्रयास करें।



नई सदी के पहले दशक यानी 2010 के बाद जन्मी पीढ़ी (जनरेशन अल्फा), बेयुमार तकनीकी सुविधाओं, कई चुनौतियों और अनेक दुविधाओं के साथ बड़ी हो रही है। ऐसे में उनका सहज, सही दिशा में विकास हो इसके लिए उन्हें थामने, संभालने और संबल देने की भी जरूरत है।



जनरेशन अल्फा मन-जीवन को थामने-संभल देने की दरकार

लाइफस्टाइल डॉ. मौनिका शर्मा

समय बदलने के साथ पीढ़ियां बदलती हैं और पीढ़ियों के साथ जमाने के रंग भी बदल जाते हैं। हर नई जनरेशन, पुरानी जनरेशन की तुलना में नए रंग-रंग को जीती ही है। समय के साथ बच्चों की जीवनशैली से जुड़ा हर बदलाव सहज स्वीकार्य नहीं होता। इसे समझना और एक संतुलन साधना जरूरी है। हाल के वर्षों में अल्फा जनरेशन की जीवनशैली से जुड़े बदलाव बेहद विचारणीय हो चले हैं। तकनीक की दस्तक ने परिवर्तन की गति ना सिर्फ कई गुना बढ़ा दी है बल्कि बहुत से नए पहलू भी जोड़ दिए हैं। ऐसे में जनरेशन अल्फा को संभालने के लिए पैरेंट्स को सजग रहने की जरूरत है।

पीढ़ी को डील करने के लिए कुछ मामलों में असीम धैर्य की भी दरकार है, तो कई बातों को लेकर स्पष्ट गाइडलाइंस बनाना भी जरूरी है। बड़ों का साथ और स्नेह, जेन अल्फा को भी सहज जीवन से जोड़े रखेगा। नियमित संवाद जरूरी: चैट-जीपीटी से सलाह लेने वाली इस जनरेशन से हर समस्या को लेकर नियमित संवाद किया जाना चाहिए। साथ ही इन बच्चों को सेल्फ कंट्रोल सिखाना भी बहुत जरूरी है। अनुशासित जीवनशैली न केवल स्मार्ट स्क्रीन से दूर रखेगी बल्कि जीवन को वास्तविक धरातल पर जीना भी सिखाएगी। इन बच्चों को स्मार्ट गैजेट्स के इस्तेमाल से पूरी तरह दूर नहीं रखा जा सकता। मानसिक रूप से मजबूत और सजग पीढ़ी पर किसी भी तरह का दबाव डालने के बजाय हर मामले में कोई

बेहतर ऑप्शन सुझाएं। रचनात्मक सोच को बढ़ावा दें। इंटरनेट गेम्स हों या दूसरी फिजिकल एक्टिविटीज, पैरेंट्स इस टैक सेवै पीढ़ी को सार्थक व्यस्तता का माहौल दें। भावनात्मक मोर्चे पर डटें: बात चाहे असल और आभासी व्यक्तित्व का फर्क समझने की हो या सामाजिक-पारिवारिक जीवन से जोड़ने की, पैरेंट्स अल्फा पीढ़ी को इमोशनल फ्रंट पर अवश्य थामें। एडिटेड फोटोज, फॉलोअर्स और वचुअल स्टारडम की आभासी दुनिया में खोए बच्चों का मन समझने का प्रयास करना जरूरी है। सोशल लाइफ से लगभग दूर हो चुकी अल्फा पीढ़ी मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक मेल-जोल के मामले में कई चुनौतियों से जूझ रही है। गुस्सा, चिड़चिड़ापन और याददाश्त कम होने जैसी समस्याएं भी सामने आ रही हैं। ऐसे में इन बच्चों को स्क्रीन स्कॉलिंग के बजाय साथ बैठकर बात करने का महत्व समझाएं। वचुअल संसार में गुम होकर अकेलेपन और अवसाद के घेर में आने से बचाने के लिए सॉफ्ट रिक्लस सिखाने पर फोकस करें। व्यावहारिक मोर्चे पर स्क्रीन स्कॉलिंग ने इन्हें जरूरत और इच्छा का अंतर समझने का माहौल ही नहीं दिया। अभिभावक इनकी मनचाही चीजें उपलब्ध करवाने और हर मांग पूरी करने से भी बचें। इस पीढ़ी के बच्चों के पास हर तरह की सूचनाएं और जानकारी भी पहुंच रही हैं। ऐसे में अभिभावक उनके सवालों पर ध्यान दें। डाउने-डपटने और चुप रहने की हदियात देने के बजाय मन से बच्चों के विचार सुनकर ही उनको सपोर्ट किया जा सकता है। पैरेंट्स तकनीक से भरपूर वातावरण में परवरिश पाती अल्फा जनरेशन में, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जुड़ाव का भाव जगाएं। मशीनों के बीच पलती इस पीढ़ी के मन की संवेदनाओं को बचाना, आज पैरेंट्स की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। *



कवर स्टोरी लोकमित्र गौतम

अनुमान के मुताबिक दुनिया में लगभग 4.14 अरब पुरुषों की आबादी है, जो विश्व आबादी की लगभग 50.27 फीसदी है। दुनिया के हर समाज में चाहे वो अफ्रीकन कबीलाई समाज हो, चाहे यूरोप का आधुनिक समाज हो, चाहे भारत और चीन जैसे पारंपरिक सभ्यताओं वाला समाज हो या अमेरिका का अत्याधुनिक बाजारू वर्चस्व वाला समाज हो। सभी समाजों में पुरुषों की मजबूती का मिथ सदियों से व्याप्त है। इस कारण आज के इस डिजिटल और एआई के युग में भी पुरुष वर्ग अनेक मानसिक, शारीरिक और आर्थिक परेशानियों के दुष्क्रम में फंसा हुआ है। दरअसल, दुनिया के हर समाज में चाहे पूरब हो या पश्चिम, पुरुषों को लेकर यह मिथ बहुत गहरे तक मौजूद है कि वे मजबूती, भावनात्मक निरपेक्षता के धनी होते हैं यानी पुरुष होने का मतलब हमेशा कठिन परिस्थितियों में भी भावनाओं पर पूरा नियंत्रण रखने वाला होता है। सच्चाई यह है कि इस मान्यता की वजह से पुरुष अनेक दबावों और परेशानियों के साथ जीने के लिए मजबूर होते जा रहे हैं।

बढ़ रही स्वास्थ्य समस्याएं

पुरुष हर हाल में मजबूत बने रहते हैं, कभी भावनाओं में नहीं बहते। इस मिथ पर खरे उतरने के लिए दुनिया के 70 फीसदी से ज्यादा पुरुष अपनी समस्याएं, खासकर शारीरिक समस्याएं किसी और को बताते ही नहीं हैं। इस वजह से उनमें शारीरिक समस्याएं बढ़ती हैं। दुनिया भर के स्वास्थ्य आंकड़े बताते हैं कि अपने स्वास्थ्य के चेकअप को लेकर पुरुष बेहद लापरवाह होते हैं। दुनिया में सबसे ज्यादा हार्ट अटैक पुरुषों को होता है और माना जाता है कि करीब 50 फीसदी पुरुषों को पहले से पता होता है कि वो इसकी चपेट में हैं, लेकिन इसका जिज्ञा कभी नहीं करते। वास्तव में इन मिथों ने पुरुषों की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को आज तक के

में की जाती थी कि वे अपनी परेशानियों का रोना नहीं रोएंगे। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि दुनिया के करीब 60 फीसदी से ज्यादा पुरुष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध विच्छेद का दर्श झेलते हैं। क्योंकि वे अपनी भावनाओं और निर्भरताओं का सामाजिक रूप से प्रदर्शन नहीं कर पाते। इसलिए ऐसी परिस्थितियों में फंस जाने के बाद न केवल वे अपने दोस्त खो देते हैं बल्कि पारिवारिक अलगाव की सजा भी पुरुषों को ही मिलती है।

नहीं दिखना चाहते इमोशनली वीक

आज जब एआई, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म की भरमार है, तब भी यह देखना चिंताजनक है कि ज्यादातर पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे अकसर छिपे रहते हैं। उदाहरण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक दुनिया के अधिकांश देशों में पुरुषों द्वारा किए गए आत्महत्या के प्रयास, महिलाओं की तुलना में बहुत ज्यादा होते हैं। मगर हैरानी की बात यह है कि करीब 40 फीसदी आत्महत्या करने वाले या आत्महत्या की कोशिश करने वाले पुरुष इस बात का बिना खुलासा किए यह कदम उठा लेते हैं कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? दरअसल, पुरुषों की यह समस्या है कि वे अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं कर पाते, प्राचीन काल से आज तक यह स्थिति जैसे की तैसे ही बनी हुई है। आज भी पुरुषों को उसी नजरिए से देखा जाता है, उनसे वही

अपेक्षा की जाती है। विडंबना यह है कि हर पुरुष

खुद को भी उसी मिथक की नजर से देखता है। इसीलिए दुनिया का हर पुरुष भावनात्मक रूप से कमजोर होने के बाद भी इस बात से डरता है कि उसे दूसरा कोई कमजोर न समझे।

कम नहीं वर्क-इकोनॉमिकल प्रेशर

इस डिजिटल युग में समस्या सिर्फ भावनात्मक नहीं है। इस दौर की एक बड़ी समस्या यह भी है कि काम-काज की डिजिटल संस्कृति ने पुरुषों को लाइफ बैलेंस बिल्कुल बिगाड़कर रख दिया है। पिछली एक सदी से बराबरी के नारों के बीच ही दुनिया के हर समाज में आज भी पुरुषों से उम्मीद यही की जाती है कि घर में कमाने की जिम्मेदारी उन्हीं की है। सोशल मीडिया द्वारा भले पुरुषों की अनेक काल्पनिक छवियां प्रस्तुत की जाती हैं, लेकिन विश्व के श्रम पर नजर रखने वाले संगठन बताते हैं कि अभी भी जीडीपी ओरिएंटेड तर्क तकरीबन 70 फीसदी काम दुनिया के पुरुष ही करते हैं और आज जबकि ज्यादातर मामलों में मशीन पुरुषों से बेहतर है, अब भी पुरुष इस दबाव में जीते हैं कि मैं अच्छा काम कर रहा हूँ या नहीं। कहीं मैं दूसरे से पीछे तो नहीं रह जाऊंगा। इस वजह से वे ओवर वर्कप्रेशर में रहते हैं।

समाज-स्वयं पुरुष बदलें नजरिया

विश्व पुरुष दिवस के अवसर पर जरूरत है कि पुरुषों की स्वास्थ्य जागरूकता और विशेषकर उनके मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति पर खुलकर बोलने और स्वीकार करने का माहौल बने। पुरुषों को बदलती तकनीकी और सामाजिक जीवन में नई वास्तविकताओं को स्वीकार करना चाहिए। इस बात की भी जरूरत है कि पुरुषों को ज्यादा से ज्यादा संवाद मंच और मानसिक स्वास्थ्य चेकअप प्लेटफॉर्म पर लाया जाए। उन्हें परिवार का साथ और संबल मिले। पुरुष स्वयं को आयरन मैन न समझें। अपने शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। तभी वे स्वस्थ-खुशहाल जीवन जी पाएंगे। *



हैं? तो विशेषज्ञों के मुताबिक भारत में पुरुषों पर आज भी वो पारंपरिक अपेक्षाएं बनी हुई हैं जो कृषि युग से उन पर रही हैं। मसलन आज भी पुरुष को परिवार का पालक, कमाने वाला और दबाव सहन कर लेने वाला लौह पुरुष समझा जाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस डिजिटल मीडिया और प्रतिस्पर्धा के युग में पुरुष उपेक्षा का शिकार हो गए हैं और इस दौर में उनकी मानसिक असुरक्षा का सबसे बड़ा कारण रोजगार पर लटकती एआई की तलवार है।

भारतीय पुरुषों की चुनौतियां

इस एआई और ग्लोबलाइजेशन के दौर में भारत में पुरुषों की औसत जीवन प्रत्याशा महिलाओं के मुकाबले करीब 08 साल कम है। सिर्फ उख के मामले में ही नहीं, पैदा होने के बाद सर्वाइव करने के मामले में भी पुरुष महिलाओं से पीछे हैं तथा हर साल बीमारियों से मरने वाले में पुरुषों और महिलाओं में 12 से 14 फीसदी का फर्क है। 2021 के रिपोर्ट में दर्ज नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो ऑफ इंडिया के आंकड़ों के मुताबिक देश में 72.5 फीसदी आत्महत्याएं पुरुषों द्वारा की जाती हैं। 40 फीसदी पुरुष इस दौर में भी अपनी मानसिक स्वास्थ्य की समस्या को परिवार से छिपाते हैं और 2017 के एक आंकड़े के मुताबिक अलग-अलग रेंज में स्वास्थ्य पड़ताल में पाया गया था कि करीब 197 करोड़ पुरुष किसी न किसी तरह की मानसिक समस्या से ग्रस्त थे। सवाल है आखिर इस खुलेपन के दौर में भी पुरुष खुद को लेकर इस तरह के बंद के शिकार क्यों



गजल
अब्दुल कलाम

यहां कोई किसी का श्रव न लेगा किसी को जब तलक मतलब न लेगा तरस जाइंगी सारिल के लिए फिर नायदुदा कशितयों का जब न लेगा सुलझती जाइंगी जब खूद ही उलझन किसी का जब कोई गजलब न लेगा कौन लेगा नागलेवा फिर अदब का जब सलीके का कोई मकतब न लेगा दे सका न जा वतन की राह में जो उसके जीने का कोई सबब न लेगा कर सका न जो किनारा तू बना से साथ तेरे फिर तेरा ही रब न लेगा

रौब जमाती मूछें!



अभी एक रोज सुबह-सुबह पार्क में टहलते समय मित्रों के संग मूछों पर बहस चली तो हर कोई अपनी मूछों पर हाथ फेरते हुए मूछों के पुराण पर चर्चा करने लगा। वकील साहब मथुरा जी अपनी सीनियर सिटीजन वाली करीने से कटी सफेद मूछों पर हाथ फेरते हुए बोले, 'मैंने जब से मूछों को बढ़ाया फिर रख-रखाव बेहतर तरीके से करने लगा, तो हर कोई मेरी मूछों को देखकर मूछों के बारे में चर्चा करने लगा। हर कोई कहने लगा है कि अब हमें मूछें हों तो नरथूलाल जैसी की जगह मूछें हों तो मथुरा लाल वकील साहब जैसी कहना पड़ेगा। इस पर मैं फूला नहीं समाता और मूछों पर हाथ फेरते हुए मूछों को और सम्मान देने लगा हूँ।' कुछ पल गवैली मुस्कन बिखरने के बाद वह पुनः बोले, 'जब से मैंने मूछें बढ़ाईं, उनको सहेजा तो बहस के मुद्दों के दौरान उस पर हाथ फेरते रहने से कई क्लाइंट के मुकदमे जीत लिए। कोर्ट में हर कोई मुझको देखने के पहले मेरी मूछें देखता। जब-जब नए क्लाइंट आते तो कहते मेरे वकील साहब तो मूछों वाले हैं! जिनको देखकर ही सामने वालों के मुकदमे की मूछें नीची हो जाती हैं।' इस पर रामनिवास जी बोले, 'आपको पता नहीं जब कोई अपना रौब अपनी वाणी, कार्यशाली से नहीं जमा पाता है तो उसकी मूछें रौब जमा देती हैं। अरे, अच्छे से अच्छा पहलवान क्यों ना हो, अखाड़े में उतरने से पहले मूछ पर ताव जरूर देता है, फिर दांव खेलता है। मूछें व्यक्ति की बांडी लैंग्वेज भी होती हैं। ताव देने वाली मूछें, डाई के जरिए सफेद से काली की गई मूछें, खड़ी-आड़ी मूछें, लंबी मूछें, लकीरों वाली मूछें, होंठों के ऊपर जलर टाइप आदि-आदि तरह की मूछों से व्यक्ति की पर्सनालिटी का पता चलता है।' इस पर ज्ञान बघारने कमल जी बोले,

'मूछों को सहलाने से, हाथ फेरने से दिमाग में तरह-तरह की नई सोच और आईडिया आते हैं। मूछें समस्या को हल भी करती हैं तो कई स्थान पर प्रॉब्लम भी क्रिएट करती हैं। मूछें व्यक्ति की पहचान होती हैं। मूछों की प्रकृति आकार के आधार पर लोगों को जाना जाता है। कुछ मूछमुड़े भी होते हैं, जिन्हें अपनी पहचान किसी अन्य तरीके से बनानी पड़ती है और इसके लिए काफी जतन करने पड़ते हैं।' जब मूछों पर इतनी बहस चल रही थी तो प्रोफेसर साहब बोले, 'मूछों का आकार गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड भी बनाता है तो कई बार मूछों पर ताव देना भारी भी पड़ जाता है और मूछों पर ताव देने वाले का दांव खाली चला जाता है। मूछ कटे को नाक कटा भी लोग मानते हैं, लेकिन हकीकत में मूछें मर्दों का श्रंगार होती हैं, रौबदार, पानीदार, बट और बल वाली मूछें से लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते हैं। मूछों पर चली बहस से ही मॉनिंग वॉक का जब समय खत्म होने वाला था, तब रामनिवास जी बोले, 'मूछों के भी भाव होते हैं, मूछ और ताव का गठजोड़ होता है। बगैर मूछों के ताव के मुकाबले कोई ताव, ताव नहीं होता है, लेकिन जब अपना का घुंटे पीना पड़ता है तो मूछें नीचे हड़ मानी जाती हैं। जब खाने-पीने की चीजों में मूछें डूबने लगती हैं तो उसे आलसी और अजीबो-गरीब माना जाता है। एंठने वाली मूछें जब तनी हुई रहती हैं तब पूरा फेस हर मोर्चे को फेस करने के लिए तैयार रहता है।' वे आगे बोले, 'कटी मूछें, तनी मूछें, राजसी मूछें, फनी मूछें, झुकी मूछें, फुकी मूछें, फेक मूछें भांति-भांति के मूछों पर किसी शायर ने कहा है, हमारी मूछ का आलम यह है कि ताव हम देते हैं, घाव दुनिया पर पड़ता है। इसलिए मूछें हों तो नरथूलाल जैसी करना न हों।' *

लघुकथा / गीतक गोरद्वारा

आज गोपाल की आंखें नम थीं। उसके साथ जो हुआ, कभी वह सोच भी नहीं सकता था। छोटे भाई साजन को अपनी ससुराल जाना था। वहां कोई धार्मिक अनुष्ठान था। निमंत्रण पत्र गोपाल के पास भी आया था। साजन के पास बड़ी गाड़ी थी। गोपाल ने उससे पूछा, 'साजन तुझे ससुराल जाना है न शाम को?' 'हां भैया, जाना है।' साजन ने जवाब दिया। गोपाल ने कहा, 'साजन मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।' 'यह तो बहुत अच्छी बात है। आपको जरूर ले चलूंगा।' साजन ने धरोसा दिया। गोपाल ने जाने की पूरी तैयारी कर ली। बस इंतजार था साजन के बुलाने का। गोपाल ने अपने बड़े बेटे से कहा, 'अरे बेटा, देखकर तो आ, तेरा चाचा मुझे लेने क्यों नहीं आया? समय तो हो चुका है।' 'जी पित्तजी! कहकर बेटा चाचा के घर चला गया। वहां से लौटकर बताया, 'पिताजी, चाचा जी तो निकल गए, घर पर ताला लगा हुआ है और गाड़ी भी नहीं है वहां।' गोपाल का मन भारी हो गया। उसने तुरंत फोन किया, 'साजन कहां है तू?' 'भैया मैं तो निकल गया ससुराल के लिए।' साजन ने जवाब दिया। 'मुझे तो तेरे साथ चलना था

भाई से बड़ा



और तूने हामी भी भरी थी।' गोपाल बोला। 'हां भैया...पर बात ऐसी थी कि...' वह बोलता-बोलता रुक गया। 'कैसी बात थी भाई?' गोपाल ने पूछा। 'गाड़ी में एक सीट आगे की खाली थी, लेकिन मुझे ओरियो को ले जाना पड़ा।' साजन हकलाते हुए बोला। 'ओरियो...ये ओरियो कौन है?' गोपाल ने आश्चर्य से पूछा। 'भैया, ओरियो मेरे डांगी का नाम है।' साजन ने बताया। 'व्या डांगी को बैठाने के लिए तूने बड़े भाई को छोड़ दिया... भाई से बड़ा तेरा डांगी हो गया।' कहकर गोपाल ने तुरंत फोन काट दिया। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान गूण

चुप्पियों का शोर

कई वर्षों से साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय मनोज मोहन का पहला कविता संग्रह 'शोर एवं अन्य कविताएं' हाल में ही छपकर आया है। मनोज अपनी कविताओं में कम शब्द चुनकर बड़ी और गहरी बात कहने में यकीन करते हैं। यही वजह है कि संग्रह की अधिकांश कविताएं छोटी हैं लेकिन उनमें हमारे समय, समाज के विपूर और

मनुष्यता के समक्ष उपस्थित संकेतों को साफ तौर पर लक्षित किया जा सकता है। 'मैं चाहता हूँ होना/सामान्य व्यक्ति/जिसे सहज जीवन मिले।' (सामान्य व्यक्ति) और 'चलो हम एक किताब बनाएं/जहां तुम दिखो खुश-खुश-मैं रहूँ उदास-उदास।' (चलो हम एक किताब बनाएं) जैसी पंक्तियां अपनी साधारणता में भी असाधारण भावार्थ प्रकट करती हैं। ये खूब करके बड़ी और गहरी बात कहने में मनोज अपनी कविताओं में कम शब्द चुनकर बड़ी और गहरी बात कहने में यकीन करते हैं। यही वजह है कि संग्रह की अधिकांश कविताएं छोटी हैं लेकिन उनमें हमारे समय, समाज के विपूर और



पुस्तक: शोर एवं अन्य कविताएं (कविता संग्रह) रचयिता: मनोज मोहन, मूल्य: 200 रु., प्रकाशक: संतु प्रकाशन, नोएडा



गोवा को आमतौर पर शानदार सी बीच वाले स्थल, हनीमून और मस्ती भरे टूरिस्ट डेस्टिनेशन के तौर पर जाना जाता है। लेकिन गोवा में ऐसे कई लोकेशन भी हैं, जो हमें इतिहास और संस्कृति से रूबरू कराते हैं। जानिए, गोवा में स्थित कुछ ऐसे ही ऑफबीट टूरिस्ट लोसेस के बारे में।

इंसान ही नहीं पशु-पक्षी भी करते हैं बदलते मौसम की तैयारी

हम इंसान तो तकनीकों के जरिए मौसम में आने वाले बदलावों का पता लगाकर उसके हिसाब से अपनी तैयारी करते हैं। लेकिन प्रकृति ने कई पशु-पक्षियों को ऐसी क्षमता नैसर्गिक रूप से प्रदान की है। ऐसे ही कुछ जंतुओं के बारे में जानिए।

रोहतक / अपराजिता

पशु-पक्षी भले इंसानों की तरह तेज दिमाग के न होते हों, लेकिन इंसानों की ही तरह आने वाले मौसम की दुश्धारियों से बचने के लिए अपने स्तर पर वे भी बाकायदा योजनाबद्ध ढंग से तैयारी करते हैं। जिस तरह मौसम बदलने से पहले इंसान गर्म कपड़ों, छत को मरम्मत या पंखे, कूलर आदि को दुरुस्त कर लेते हैं, उसी तरह धरती के दूसरे पशु-पक्षी भी आने वाले मौसम की चुनौतियों के लिए अपनी ही सूझबूझ और योजनाबद्धता से तैयारी करते हैं। फर्क सिर्फ इतना होता है कि इंसानों के विपरीत ये पशु-पक्षी ऐसी तैयारियां बिना किताबों पढ़े, बिना मौसम विभाग की चेतावनी सुने ही करते हैं। क्योंकि इनके पास न रेडियो होता है, न प्रकृति की गतिविधियों की सूचना देने वाला इनके लिए कोई जरिया होता है। दरअसल, खुद कुदरत ने ही इन्हें अनुमान लगाने की अद्भुत क्षमता दी है, य उसी के आधार पर अपने सहज ज्ञान और जैविक अनुभव प्रवृत्तियों के जरिए मौसम की बदलती करवटों के लिए महीनों पहले से ही तैयारी में जुट जाते हैं।

कोयल की कूक का संकेत: भारत के ग्रामीण परिवेश में बहुत सारी जानकारियों को अखबारों, रेडियो या किताबों से नहीं, पशु-पक्षी की गतिविधियां देखकर जानी, समझी जाती हैं। मसलन, अगर कोयल के स्वर में मधुर स्वर आ गया है, तो इसका मतलब यह है कि वह बदलते तापमान के प्रभाव में अपने प्रजनन चक्र को समायोजित करने की कोशिश में है। मसलन, अगर कोयल के स्वर में मधुरता है, तो पतझड़ निकट है, क्योंकि मार्च, अप्रैल में जब पेड़ों पर नई कोयलें फूटती हैं, उसी समय कोयल, कोवे के घोंसले में चुपके से अंडे दे देती है, इसे विषय के जानकार लोग 'बूढ़ पैरासिटिज्म' कहते हैं यानी जब तपती गर्मी आए, तो उसके बच्चे किसी अन्य पक्षी की देखभाल में सुरक्षित पलें। कहने का मतलब यह है कि कोयल खुद मौसम की कठिनाइयों को समझकर पहले से ही अपनी अगली पीढ़ी की सुरक्षा सुनिश्चित कर लेती है।

हाथी बनाता है जल का स्रोत: हाथी एक ऐसा पशु है, जो भारत में मानसून और सूखे दोनों का बहुत सटीक तरीके से



अंदाजा लगा लेता है। सूखा पड़ने से पहले वह झुंड बनाकर लंबी यात्राएं शुरू कर देता है और उस और बढ़ता है, जहां जलस्रोत होते हैं। राजस्थान और मध्य भारत के जंगलों में हाथियों का यह जलप्रवास, वर्षों पुराने जलस्रोतों की उनकी स्मृतियों पर आधारित होते हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि वे भूमि की नमी, पौधों के मुद्गाने और हवा की गंध से पानी की कमी का किसी भी वैज्ञानिक डिवाइस से ज्यादा सटीक अनुमान लगा लेते हैं।

अबाबील देती है मानसून का संदेश: इस छोटी-सी चिड़िया को भारत में मानसून की संदेशवाहक भी कहते हैं। दरअसल, अबाबील, हजारों किलोमीटर दूर अफ्रीका या दक्षिण भारत से उड़कर गर्म और आर्द्र इलाकों में आती है।

वैज्ञानिकों ने सालों निगरानी के बाद यह पाया है कि अबाबील पक्षी केवल भोजन की तलाश के लिए प्रवास नहीं करती। इसके इस प्रवासन चक्र में मौसम जनित्र सुरक्षा की भी योजना छिपी होती है। जब उत्तर

भारत में सर्दी बढ़ती है और कोट-पतंगे बेहद कम हो जाते हैं, तब यह अबाबील दक्षिण भारत की ओर उड़ जाती है और जैसे ही गर्मियां लौटती हैं, यह भी अपने पुराने घर की ओर लौट आती है। ग्रामीण भारत में लोग अबाबील देखकर अनुमान लगाते हैं कि अब बारिश बस आने ही वाली है। वास्तव में यह पक्षी वातावरण के दबाव और आर्द्रता के सूक्ष्म बदलाव को बहुत बारीकी से महसूस कर लेती है।

इस तरह देखें तो इंसान ही नहीं, पशु-पक्षी भी आने वाले मौसम की दुश्धारियों से खुद को बचाने के लिए अपने ज्ञान, पूर्वानुमान और कठोर अनुशासन का इस्तेमाल करते हैं। *

जल संचित कर लेते हैं ऊंट

ऊंट को रेगिस्तान का जहाज माना जाता है, क्योंकि वह रेगिस्तान में दूसरे किसी भी वाहन से ज्यादा बेहतर और सहजता से रह लेता है। लेकिन ऊंट सिर्फ रेगिस्तान के बारे में ही इतनी सटीकता से नहीं जानता बल्कि वह रेगिस्तान के सबसे कठोर मौसम में जीवित रहने की कला भी मल्लोमाति जानता है। यही वजह है कि जब राजस्थान में गर्मी अपने चरम पर होती है, तो वह न केवल अपने शरीर में पानी की खपत को नियंत्रित कर लेता है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से उसका शरीर पानी को पुनःअवशोषित करने की क्षमता भी रखता है। इसी के चलते वह कुछ दिनों तक बिना पानी पीए भी रह लेता है, लेकिन यही ऊंट मानसूनी संकेत मिलने पर जरूरत से कई गुना ज्यादा पानी पीता है। अपने शरीर में एक वाटर रिजर्व मिलाकर लेता है। वास्तव में यह उसका छठी इंद्रिया का मौसम प्रबंधन है, जो रेगिस्तान की कठोर परिस्थितियों में उसके जीवन को संभव बनाता है।



ऊंट को रेगिस्तान का जहाज माना जाता है, क्योंकि वह रेगिस्तान में दूसरे किसी भी वाहन से ज्यादा बेहतर और सहजता से रह लेता है। लेकिन ऊंट सिर्फ रेगिस्तान के बारे में ही इतनी सटीकता से नहीं जानता बल्कि वह रेगिस्तान के सबसे कठोर मौसम में जीवित रहने की कला भी मल्लोमाति जानता है। यही वजह है कि जब राजस्थान में गर्मी अपने चरम पर होती है, तो वह न केवल अपने शरीर में पानी की खपत को नियंत्रित कर लेता है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से उसका शरीर पानी को पुनःअवशोषित करने की क्षमता भी रखता है। इसी के चलते वह कुछ दिनों तक बिना पानी पीए भी रह लेता है, लेकिन यही ऊंट मानसूनी संकेत मिलने पर जरूरत से कई गुना ज्यादा पानी पीता है। अपने शरीर में एक वाटर रिजर्व मिलाकर लेता है। वास्तव में यह उसका छठी इंद्रिया का मौसम प्रबंधन है, जो रेगिस्तान की कठोर परिस्थितियों में उसके जीवन को संभव बनाता है।

टूरिस्ट स्पॉट बुधरा फातमा

हालांकि भारत के लगभग हर राज्य में ऐसे स्थल मौजूद हैं, ऐसी ठेठ कहानियां और किस्से सुनने-पढ़ने को मिल जाएंगे, जिसमें उस स्थान और अपने देश से जुड़े गौरवशाली इतिहास का ब्यौरा मिलता है। गोवा में भी ऐसे कई कम चर्चित स्थल मौजूद हैं। खूबसूरत सी बीच के लिए दुनिया भर में फेमस गोवा में स्थित कुछ ऐसे ही लोकेशन के बारे में आपको बता रहे हैं, जहां इतिहास और संस्कृति का मिला-जुला संगम देखने को मिलता है।

बुडबुड ताली

साउथ गोवा के नेत्रवाली में एक अनोखा तालाब मौजूद है, जिसे बुडबुड ताली या बबल लेक के नाम से जाना जाता है। करीब 400 साल पुराना यह तालाब गोपीनाथ मंदिर के प्रांगण में मौजूद है, जहां सिर्फ ताली बजाने या किसी तेज आवाज से ही तालाब के नीचे से पानी के ऊपर की तरफ बुलबुले बनने लगते हैं। यहां के स्थानीय लोगों में इस तालाब को लेकर बहुत श्रद्धा है। हालांकि साइंटिस्ट्स इस प्रभाव के लिए किसी रासायनिक क्रिया और गैस को जिम्मेदार मानते हैं। कुदरत के करिश्मे वाले इस अनोखे तालाब को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं।

उसगलीमल शिलालेख

साउथ गोवा के उसगलीमल गांव में मौजूद यह शिलालेख, करीबन 4 हजार से 6 हजार साल पुराना है। सालों तक इस गांव से बहती कुशावती नदी की गोद में छुपे



इतिहास-संस्कृति से रूबरू कराते गोवा के ये अनोखे पर्यटन स्थल



कुर्डी गांव



रिवोना केव

ये शिलालेख लोगों की नजरों से दूर थे। 1993 में जब गांव वालों की नजर नदी के किनारे पत्थरों पर अलग-अलग आकृतियों पर पड़ी तो उन्होंने पुरातत्व विभाग को खबर दी। पता चला ये हजारों साल पहले, शायद मध्य पाषाण युग का समय था, जब इंसान अपने आस-पास की चीजों को देखकर उसकी आकृति पत्थरों पर उकेरा करता था। इन आकृतियों में जानवर, तरह-तरह के रास्ते और पैरों के निशान देखने को मिलते हैं। अगर आप इतिहास और पुरातात्विक अवशेषों में रुचि रखते हैं, तो गोवा के इस जगह पर आपको जरूर जाना चाहिए। घने जंगल और कुशावती नदी का यह हिस्सा आपका मन मोह लेगा।

कुर्डी गांव

सन 1960 तक सांगेम तालुका नामक स्थान पर मौजूद कुर्डी गांव एक अच्छा-खासा बसा-बसाया गांव हुआ करता था। हिंदू, मुस्लिम और कैथलिक समुदाय की समृद्ध आबादी यहां निवास करती थी।

सन 1960 में जब साउथ गोवा को ज्यादा मात्रा में पानी मुहैया करवाने के लिए सलोलिम डैम बनाने का प्रस्ताव आया तो सबसे पहले कुर्डी गांव को खाली करवाया गया। ये पूरा गांव पानी के अंदर समा गया ताकि डैम का पानी सुचारू रूप से बह सके। मई महीने में जब पानी का स्तर कम होता है तब गांव का कुछ हिस्सा पानी के बाहर दिखाई देता है। वे लोग, जो अपना घर बार छोड़कर दूसरी जगह बस गए वो मई महीने में यहां आकर अपनी पुरानी यादों को ताजा करते हैं। हर साल तीनों समुदाय के लोग यहां आकर अपने-अपने धार्मिक जगहों की स्मृति में उत्सव मनाते हैं। इस दौरान बड़ी संख्या में पर्यटक भी यहां जुटते हैं।

रिवोना केव

साउथ गोवा में स्थित रिवोना केव यानी रिवोना गुफाओं को उस दौर का ऐतिहासिक स्थल माना जाता है, जब गोवा में मानव समुदाय की बस्ती बसनी शुरू ही हुई थी। माना जाता है कि इस जगह पर उस समय के बुद्धिमान लोग ही आकर बसते थे। मान्यता है कि यहां बौद्ध धर्म के अनुयायी भी रहा करते थे। 7वीं शताब्दी की इन गुफाओं को देखने के लिए यहां देश-विदेश से काफी पर्यटक आते हैं। *

अवैररनेस शिखर चंद जैन

हर साल 19 नवंबर को वर्ल्ड टॉयलेट डे यानी विश्व शौचालय दिवस मनाया जाता है। आप सोच रहे होंगे कि भला शौचालय के लिए भी कोई दिन मनाने की क्या जरूरत है! आपको बता दें कि भले ही आपके घर में सुविधायुक्त शौचालय है, लेकिन दुनिया में आज भी करोड़ों लोग ऐसे हैं, जिनके पास सुरक्षित और स्वच्छ शौचालय नहीं हैं। विश्व शौचालय संगठन द्वारा एकत्रित आंकड़ों के अनुसार, विश्व में लगभग एक अरब लोग आज भी खुले में शौच करते हैं। ऐसे में यह दिन हमें यह याद दिलाने के लिए मनाया जाता है कि शौचालय हमारे स्वास्थ्य, सम्मान और पर्यावरण के लिए कितना जरूरी है।

विश्व शौचालय दिवस का इतिहास: विश्व शौचालय दिवस की शुरुआत 2001 में हुई थी। स्वास्थ्य और जन सरोकार विशेषज्ञों की सलाह पर स्वच्छता के मुद्दों पर वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के लिए विश्व शौचालय संगठन की स्थापना की गई। वर्षों की अंतरराष्ट्रीय बहस और सिफारिश के बाद, संयुक्त राष्ट्र ने 2013 में आधिकारिक तौर पर विश्व शौचालय दिवस को वार्षिक आयोजन के रूप में घोषित किया। यह दिवस 2030 तक सभी के लिए स्वच्छ जल और स्वच्छता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

बुनियादी जरूरत है शौचालय: इस वर्ष विश्व शौचालय दिवस की थीम 'बदलती दुनिया में स्वच्छता' और स्लोगन है 'हमें हमेशा शौचालय की आवश्यकता होगी'। इस साल की थीम और स्लोगन का मुख्य संदेश यह है कि चाहे दुनिया कितनी भी बदल जाए, जितनी भी नई तकनीकें आ जाएं, हम चाहे कितने ही एडवांस हो जाएं, शौचालय की जरूरत कभी खत्म नहीं होगी। यह कोई लगजरी नहीं बल्कि एक बुनियादी जरूरत है। हर घर में शौचालय होना तो आवश्यक है ही। साथ ही यह भी जरूरी है कि हम शौचालय का इस्तेमाल करते समय और उसके बाद कुछ बातों का ध्यान रखें।

फलश करते समय रखें ध्यान: टॉयलेट में फलश हमेशा ढक्कन लगाकर करें क्योंकि टॉयलेट फलश आपके टॉयलेट से छह फीट की ऊंचाई तक कीटाणुओं को बाहर निकाल सकता है। हर बार जब आप टॉयलेट फलश करते हैं, तो कीटाणु हवा में उड़ जाते हैं और आपके बाथरूम में घूमकर आपके टॉयलेट के आस-पास की जगहों और वस्तुओं जैसे-टूथब्रश, साबुन आदि पर भी पहुंच सकते हैं। अगर आपके टॉयलेट सीट में ढक्कन नहीं है, तो टॉयलेट फलश करने के बाद तुरंत बाहर निकल जाएं।

हाथ अच्छे से धोएं: टॉयलेट यूज करने के बाद बहुत आधुनिक तरह से हाथ धोना जरूरी है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि लगभग 20 प्रतिशत लोग शौचालय जाने के बाद अपने हाथ नहीं धोते। जो लोग धोते भी हैं, उनमें से केवल 30 प्रतिशत

घर में सुविधायुक्त टॉयलेट, हमारे व्यक्तिगत स्वास्थ्य के साथ-साथ स्वच्छ वातावरण एवं गरिमापूर्ण जीवन के लिए भी बहुत जरूरी है। वर्ल्ड टॉयलेट-डे, 19 नवंबर पर बता रहे हैं इससे जुड़ी कुछ रोचक बातें।

सभी के लिए है जरूरी स्वच्छ-सुविधायुक्त टॉयलेट



ही साबुन का इस्तेमाल करते हैं, जबकि बाथरूम के कीटाणुओं को मारने के लिए साबुन से लगभग 15 से 20 सेकेंड तक अच्छी तरह हाथ धोने की सलाह दी जाती है। निराशाजनक बात यह है कि केवल 5 प्रतिशत लोग ही 15 सेकेंड या उससे ज्यादा समय तक हाथ धोते हैं।

टॉयलेट पेपर का हो सीमित इस्तेमाल: टॉयलेट पेपर का आवश्यकतानुसार सीमित उपयोग करने की आदत डालनी चाहिए। इसे एक्स्ट्रा वेस्ट करने से बचना चाहिए। एक चौंकावे वाला तथ्य यह है कि अमेरिकी प्रति वार्षिक 433 मिलियन मील टॉयलेट पेपर का उपयोग करते हैं, जो पृथ्वी से सूर्य तक जाने और वापस आने की

समिलित दूरी के बराबर है।

शौचालय में स्मार्टफोन है खतरनाक: लगभग 75 प्रतिशत स्मार्टफोन धारक शौचालय में अपने फोन का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें टेक्स्ट मैसेज भेजना, फोन कॉल करना, वेब सर्फिंग और ऑनलाइन शॉपिंग शामिल है। यह स्वास्थ्य के लिए खतरनाक आदत तो है ही, अगर फोन टॉयलेट में गिर जाए तो यह जेब पर भी भारी पड़ सकता है। मोबाइल फोन इस्तेमाल करने वाले लोग अधिक देर तक शौचालय में बैठे रहते हैं, क्योंकि उनका ध्यान फोन पर रहता है। शौचालय की सीट पर लंबे समय तक बैठने से पाइल्स हो सकता है।

पब्लिक टॉयलेट के इस्तेमाल में बरतें सावधानी: व्यापक सर्वे और अध्ययन के बेस पर विशेषज्ञों का मानना है कि अगर आप किसी सार्वजनिक शौचालय में सबसे साफ शौचालय का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो पब्लिक में सबसे पहले वाले शौचालय कक्ष (जो दरवाजा या सिंक के सबसे पास हो) का ही इस्तेमाल करें। यह आमतौर पर सबसे कम यूज किया जाता है और इसलिए तुलनात्मक रूप से अधिक साफ होता है।

सबसे गंदा स्थान नहीं है टॉयलेट: आपको यह जानकर हैरानी होगी कि औसत रसोईघर के चॉपिंग बोर्ड पर शौचालय की सीट की तुलना में लगभग 200 प्रतिशत अधिक बैक्टीरिया होते हैं। इससे ज्यादा हैरान करने वाली बात यह है कि स्मार्टफोन में टॉयलेट हैंडल की तुलना में लगभग 20 गुना अधिक बैक्टीरिया होते हैं। एक औसत डेस्क पर एक औसत शौचालय सीट की तुलना में 400 गुना अधिक बैक्टीरिया होते हैं। *



दुनिया का अब तक का सबसे महंगा टॉयलेट है।

खिने देंड केलाश सिंह

भारतीय समाज में कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर वंश और समाज में शादी समारोह का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। शादी यही वजह है कि बॉलीवुड की कई फिल्मों की कहानियों के केंद्र में भी शादी समारोह को रखा गया है। चाहे वह परंपरागत अरेंज मैरिज हो, लव मैरिज हो, भागकर की गई शादी हो, अमीर-गरीब के बीच शादी हो, अंतर-जातीय या अंतर-धार्मिक विवाह हो या दो अलग-अलग संस्कृति या भाषा से संबंधित लोगों की शादी हो।

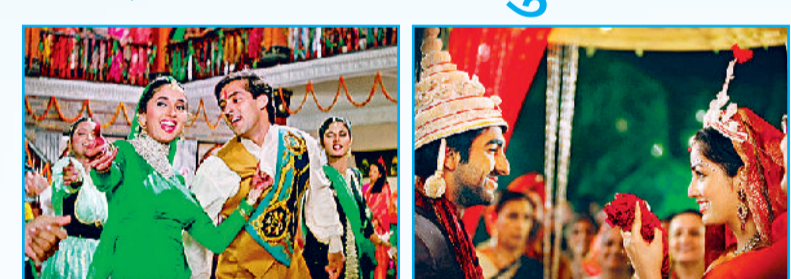
वेडिंग एलबम जैसी 'हम आपके हैं कौन': साल 1994 में रिलीज फिल्म 'हम आपके हैं कौन' वेडिंग फंक्शन पर केंद्रित एक बेहतरीन फिल्म है। फिल्म के केंद्र में यूं तो प्रेम (सलमान खान) और निशा (माधुरी दीक्षित) की लव स्टोरी, अपने परिवार के लिए त्याग की भावना है। लेकिन यह वास्तव में अभिभावकों द्वारा तय किए गए परंपरागत हिंदू विवाह का प्रभावी ढंग से तैयार किए गए शादी के वीडियो एलबम की तरह है। फिल्म में दो दोस्त जब बहुत दिनों बाद मिलते हैं, तो आपस में अपने बच्चों की शादी कराने का निश्चय करते हैं और फिर एक परंपरागत विवाह का सिलसिला आरंभ हो जाता है। लड़के और लड़की की मुलाकात घर से बाहर अलग स्थान पर कराई जाती है। वे एक-दूसरे को पसंद कर लेते हैं। फिर उनकी सगाई होती है और बाद में लड़के वाले बारात लेकर कन्या पक्ष के घर पहुंचते हैं। फिल्म में जूते चुराने के रस्म से लेकर शादी से संबंधित अनेक रस्मों-रिवाज को खूबसूरती से दिखाया गया है। जूते चुराने की रस्म पर केंद्रित गाना 'जूते दे दो पैसे ले लो' फिल्माया गया है। इसके अलावा फिल्म में कई सिचुएशंस पर बेहतरीन गीत पिरोए गए हैं।

परंपरागत विवाह पर बनी फिल्में: देखा जाए तो उत्तर भारत में परंपरागत हिंदू विवाह और परंपरागत मुस्लिम शादी में कोई विशेष अंतर नहीं है। यहां शादी में फेरों की जगह कंजरी को बुलाकर निकाह पढ़ाया जाता है। मां-बाप द्वारा रिश्ता तय करना, सगाई, बारात, जूते चुराई, विदाई जैसी कई रस्में हिंदू और मुस्लिम समाज की शरियातों में समान रूप से देखी जा सकती हैं। 'बहू बेगम', 'मेरे हजूर', 'मेरे महबूब' आदि फिल्मों में शादी की इन रस्मों को बखूबी प्रस्तुत किया गया है। बी.आर. चोपड़ा ने तो अपनी फिल्म 'निकाह' में शादी के साथ-साथ तीन तलाक जैसे संवेदनशील मुद्दे को भी उठाया है।

पंजाबी-पुनआरआई परिवार की 'मानसून वेडिंग': मीरा नायर की 2001 में आई फिल्म

शादी, बॉलीवुड फिल्मों का एक सदाबहार विषय रहा है। शादी पर केंद्रित एवं इसके इंट-विगिट फिल्मों और गाने बॉलीवुड में बनते रहे हैं। इनमें से कई फिल्में और गाने सुपर-हिट हिट रहे। इन्हें दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। विवाह-केंद्रित ऐसी ही कुछ बेहतरीन फिल्मों और गानों पर एक नजर...

हिंदी फिल्मों में खूब दिखी है शादी-ब्याह की बहुरंगी छटा



'हम आपके हैं कौन' में सलमान-माधुरी दीक्षित 'मानसून वेडिंग', दिल्ली के एक पंजाबी परिवार में शादी के आयोजन और इस दौरान होने वाले उथल-पुथल पर केंद्रित है। फिल्म में ललित वर्मा और उनकी पत्नी पिम्मी अपनी बेटी अदिति की शादी एक एनआरआई हेमंत राय से तय करते हैं। जैसा कि भारतीय समाज में अक्सर होता है, इस प्रकार के विवाह में एक बार पूरा वित्तुत परिवार

दुनिया भर से आकर एक जगह एकत्र हो जाता है और अपने साथ अपना भावनात्मक अतीत भी लेकर आता है। शादी की तैयारियों के बीच पारिवारिक चुगालियां, राजनीति, साजिश, हंसी-मजाक, मौज-मस्ती आदि सब कुछ चल रहा होता है और नए प्रेम समीकरण भी विकसित होते हैं। फिल्म को इतनी खूबसूरती से बुना गया है कि 'मानसून वेडिंग' हर किसी को अपने ही परिवार की शादी जैसी लगने लगती है।

इंटरकलचरल मैरिज पर आधारित 'विककी डोनर': सुजीत सरकार की 2012 में रिलीज हुई फिल्म 'विककी डोनर' में दो अलग-अलग संस्कृतियों से ताल्लुक रखने वाले जोड़े के

पॉपुलर हुए विदाई के ये गीत

शादी के बाद बहूचलन की विदाई का वक्त कुछ ऐसा होता है, जब मिलन और जुदाई, खुशी और आंसू एक साथ एक ही समय व्यक्त हो रहे होते हैं। हिंदी फिल्मों में विदाई के सिचुएशन पर अनेक गीत बने हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'छोड़ बाबुल का घर, मोहे पी के वगैर आजा जगना पड़ा' (बाबुल), 'खुशी-खुशी दो दिवा, तुम्हारी बेटी राज करेगी' (अनोखी रात), 'बाबुल की दुआएं लेती जा' (नील कान्हा) आदि कई ऐसे सदाबहार विदाई के गीत हैं, जो आज भी हिंदी पट्टी की शादियों में विदाई के समय खासतौर से बजाए जाते हैं।

